कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
वर्षः११, अंकः०५-०६
जनवरी/फरवरी-२०१२, इलाहाबाद

संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
09935959412

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः	रु0 10/–
वार्षिकः	रु0 110/–
पॉच वर्ष–	रु0 500/–
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–

क्यों खिलौना बनी हुई है मुस्लिम महिला २१
आओ आध्यात्मिक रंगों से खेले होली ३०

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग ०४
अपनी बात ०५
मुद्दा २०
समाज २४
कविताएं– २५,२६
अहिन्दी भाषी रचनाकार– २७
कहानीः मानवताा २८
साहित्य समाचार– १६,२४,२६, ३१,३२,३३
पुस्तक समीक्षा– ३४

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़े, बल्कि दूसरे दोस्तों को भी इससे परिचित कराएं.
२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएं भेजें। उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. बिना उचित टिकट लगे जबाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.
३. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.
४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.
५.जो रचनाएं आपको अच्छी लगें उसके साथ रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.
६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 पर बात करें

❑संपादक

प्रेरक प्रसंग

हमारी रचनात्मक कल्पनाएं सफल भी होती है और यह सब कल्पनाओं के पीछे सम्बन्धित लगाव, कर्म तथा दृढ़ता पर निर्भर है. अमुक सिद्धि हमें तभी मिलती है, जब हम उसके पाने के लिए प्राण-प्रण से प्रयत्न में जुट जाते हैं.

+++++++++++++++++++++++

सदा शुभ कल्पनाएं करनी चाहिए और उनको सफल होने के लिए जीवन पर्यन्त प्रयास करना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी. अधूरी-असफलता भावी जीवन में सफलता मिलेगी, चिन्ता न करो.

++++++++++++++++++++++++

किसी प्रिय वस्तु या शक्ति से अलगाव होने पर उसकी प्राप्ति के लिए अन्तःकरण से जो धैर्य जागृत होता है, उसको प्रतीक्षा कहते हैं. वियोग की चरम सीमा में संयोग की सुखद कल्पना को प्रतीक्षा कहा जा सकता है.

++++++++++++++++++++++++

प्रतीक्षा में जब निराशा या अवश्विास का प्रादुर्भाव होता है, तभी दुःख का रुप प्रगट होता है. ऐसी प्रतीक्षा उसके लिए असहय होकर प्रतिकूल प्रभाव परिलक्षित करती है.

प्रतीक्षा में प्रिय वस्तु का स्मरण, चिन्तन सम्भावना का अनुभव होता है और उसके प्रति लगाव अनुभव अत्यधिक बढ़ जाता है. अतएव प्रतीक्षा में सदाप्रिय से सम्बन्धित मधुरता का होना संभावित है.

++++++++++++++++++++++++

जीवन की सबसे दुःख दामिनी भावना निराशा को कहा जा सकता है. इस भावना से उसका जीवन नीरस, विरागी तथा कर्त्तव्य शून्य बन जाता है तथा इस सुखद संसार में सर्वत्र उसे दुःख ही दुःख दिखाई पड़ता है.

++++++++++++++++++++++++++

निराशा को यदि विनाश कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं है. इसमें धीरे-धीरे वह अद्य पतन को प्राप्त हो जाता है, और ऐसे ही उसके जीवन की सम्भावना समाप्त हो जाती हैं.

+++++++++++++

किसी कार्य की अप्रत्याशित असफलता प्रिय वस्तु का सदा के लिए अलगाव, जीवन से वैराग्य के प्रादुर्भूत होने में सहायक होते हैं एवम् अडिग विश्वास, मन की स्थिरता, अस्त व्यस्तता, अपनी शक्ति में आस्था उसके परिपल होने के माध्यम बनते हैं.

✍दाऊजी

अदाब अर्ज़ है

गहन विचारण कीजिये, क्या है यह अद्वैत
निराकार अरु सूक्ष्मतम्, में विभेद है द्वैत।।

कुछ है जो अदृश्य है, इस जीवन की भोर।
मैं तू सक्रियता वही, निरख-परख चहुं ओर।।

सदाचार से हो गया, निर्मल जिसका आत्म।
सत्य क्षमा से शीत ही, हृदय पाये परमात्म।।

जहाॅ प्रेम है, शान्ति है, जहां शान्ति वहाॅ धर्म।
जहां धर्म वहीं सत्य है, व्याप्त एक सत् मर्म।।

मानव सेवा जो करे, माधव सेवा होय।
मुक्ति मार्ग का फासला, शीघ्र संकुचित होय।।

कोई पूजा साधना, कोई नहीं पुकार।
विमल हृदय में आप ही, आ बसते त्रिपुरार।।

तेरा मेरा सोचिये, क्या साधो सम्बन्ध।
तन शाश्वत् आधार या, अन्तर बसी सुगन्ध।।

हृदय कमल से फेंकियें, अवगुण शूल निकाल।
अन्त्स यदि परिशुद्ध हो, ईश आयें तत्काल।।

✍डॉ० बुद्धि प्रकाश शर्मा, बिजनौर, उ.प्र.

सर्वोच्च न्यायालय का स्वागत योग्य फैसला

गत वर्ष ४-५ जून को रामलीला मैदान में जो घटना घटी थी वह वाकई निन्दनीय थी. रात्रि के समय में ऐसे कदम उठाना मौलिक अधिकारों का हनन ही कहा जाएगा. विदित हो कि रामलीला मैदान दिल्ली में स्वामी रामदेव और उनके समर्थक देश में बढ़ते भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ विरोध प्रर्दशन कर रहे थे. विरोध प्रदर्शन लोकतंत्र का मूलाधार भी है. लेकिन आधी रात को पुलिस ने धारा १४४ लगाकर लोगों को पंडाल से हटने का फरमान जारी कर दिया. लेकिन स्वामी रामदेव ने अपने समर्थकों को पथराव करने के लिए उकसाया जिसमें एक आदमी की जान भी गई और कई लोग जख्मी हो गए. आंदोलन के मुखिया बाबा रामदेव अपने समर्थकों को बीच मझदार में झोड़कर अपने औरतों के कपड़े पहनकर चूपके से निकल लिए थे. इस घटना का सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए दिल्ली पुलिस व केन्द्र सरकार से जवाब मांगा. इसी घटना के फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि **'अभिव्यक्ति की आजादी, शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों के लिए लोगों को इकट्ठा करना एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की बुनियादी विशेषताएं हैं. लोकतांत्रिक देश के नागरिकों का यह अधिकार है कि सरकार के किसी फैसले या कदम के खिलाफ वे आवाज उठाएं, बल्कि उसे इस हक को प्रोत्साहित करना चाहिए. यह राज्य का कर्त्तव्य है कि वह अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार को उसके व्यापक अर्थो में लागू करे, न कि युक्ति संगत प्रतिबंध के नाम पर ऐसे अधिकारों को कुचलने के लिए अपने कार्यपालिका व विधायी अधिकारों को इस्तेमाल करें.'**

अदालत ने दिल्ली पुलिस के इस कृत्य के लिए दोषी मानते हुए मृत व्यक्ति के परिवार, घायलों को मुआवजा देने को कहा है. लेकिन साथ में कोर्ट ने यह भी माना है कि आंदोलन के नेतृत्व करता स्वामी रामदेव भी इस भगदड़ के दोषी है. इसलिए ही कोर्ट ने अपने आदेश मे कहा है कि मुआवजे की पचहत्तर फीसदी रकम दिल्ली पुलिस व पच्चीस फीसदी रकम स्वामी रामदेव देगें. दोषी पुलिस वालों के खिलाफ विभागीय कार्यवाही करने को भी कहा है.

माननीय न्यायालय के आदेश से यह तो स्पष्ट है कि नागरिकों को अपनी आवाज उठाने का पूरा हक है. लेकिन साथ में यह भी हिदायत है कि आंदोलनकारी अपने समर्थकों की भीड़ को नियत्रित करने की क्षमता रक्खें. जनसमर्थन में अपनी आवाज उठाने के अधिकार का दुरुपयोग न करें. यानि उन्हें भड़का कर कानून को अपने हाथ में लेने के लिए प्रोत्साहित न करें।

निश्चय ही हमें अपनी आवाज उठानी चाहिए चाहें वह किसी के भी खिलाफ हो. अगर हम गूंगे बने रहेंगे तो हमारे नेता हमें बधूआ मजदूर बना देगें. अपने खिलाफ, अपने दोस्तों, परिवार, गांव/शहर, जिले, राज्य या अन्य किसी भी प्रकार के जनहित को प्रभावित करने वाले कार्यो को खुलकर विरोध करें. लोकतंत्र में विरोध करना ही हमारा मूल हथियार है. लेकिन साथ में यह भी ध्यान रक्खें कि विरोध के चक्कर में कानून को हाथ में न लें. जैसे ट्रेन रोकना, बसों को तोड़ना, दुकानें, स्कूल, कॉलेज, जबरजस्ती बंद कराना आदि. हमें अपना विरोध शांतिपूर्ण तरीके से दर्ज करना होगा. अगर आपके साथ जनसमर्थन है तो सरकार शांतिपूर्ण तरीके से किए गये आंदोलन से भी झुकेगी. अगर आपकी मांगे कानूनन जायज है और आपके साथ जनसमर्थन है तो कोई भी सरकार झूकने को बाध्य होगी. कानून को हाथ मे लेकर हम अपना ही नुकसान करते हैं. देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं. जिसका खामियाजा हमें ही भुगतना होता है. इन नुकसानों की भरपाई हमारे द्वारा दिए जा रहे कर से ही किया जाता है. अगर ये पैसे रहेंगे तो विकास कार्यो में खर्च होंगें.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

९वॉं साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न

कविता सिर्फ मनोरंजन की वस्तु नहीं, इसमें शिक्षा और सूचना का भी समावेश होना चाहिएःडॉ० राममोहन

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के तत्वावधान में ९वां साहित्य मेला हिन्दुस्तानी एकेडेमी में समारोह पूर्वक सम्पन्न हो गया. इस अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी, काव्य पाठ, परिचर्चा एवं खुली चर्चा, बाल काव्य प्रतियोगिता व अलंकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधान सचिव-कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलौर ने किया और मुख्य अतिथि श्री राम मोहन पाठक, निदेशक-मदन मोहन मालवीय पत्रकारिता संस्थान, काशी विद्यापीठ, वाराणसी थे. इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० वेद प्रकाश कंवर, पूर्व राजदूत कनाडा व डॉ०सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', वरिष्ठ साहित्यकार नई दिल्ली उपस्थित थीं.

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ० राम मोहन पाठक ने हिन्दी को आम नहीं खास भाषा बताई. उन्होंने इंटरनेट पर विकृत हो रही हिन्दी को बचाने और अन्य भारतीय भाषाओं के सरंक्षण की अपील की. अंग्रेजी दवाओं के नाम हिन्दी में भी लिखे जाने की वकालत करने और इसके लिए राजभाषा विभाग की ओर से पुरस्कार के लिए नामित डॉ० पाठक ने पुरजोर तरीके से कहा, साहित्य में समाज को बदलने की बड़ी ताकत है. कविता सिर्फ मनोरंजन की वस्तु नहीं, इसमें शिक्षा और सूचना का भी समावेश होना चाहिए. वर्तमान में कविता को सिर्फ मनोरंजन की दृष्टि से देखा जा रहा है. यही कारण है कि कविता और कवियों को जो सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिला.

कार्यक्रम का उद्घाटन करती सुश्री बी.एस.शांताबाई, सुखवर्ष कंवर, डॉ तारा सिंह व ईश्वर शरण शुक्ल

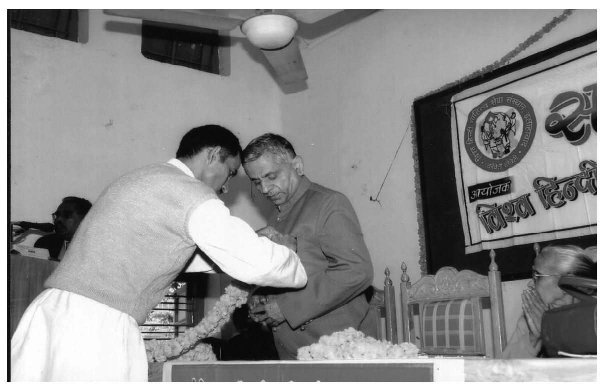
मुख्यअतिथि डॉ० राम मोहन पाठक का स्वागत करते हुए संस्थान सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

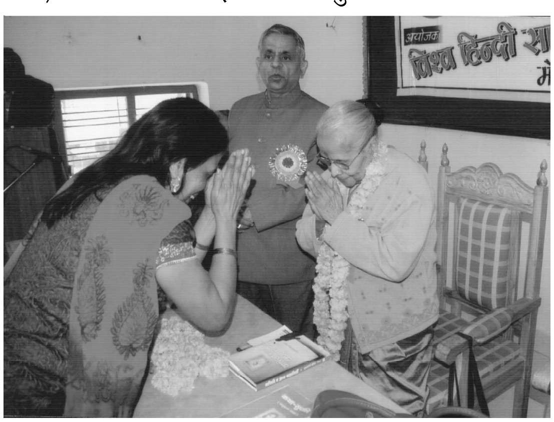
कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सुश्री बी.एस.शांताबाई स्वागत करती संस्थान की कार्य.अध्यक्ष डॉ तारा सिंह

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ० वेद प्रकाश कंवर का स्वागत करते कार्यसमिति सदस्य महेन्द्र कुमार अग्रवाल

साहित्य मेला

मंचासीन बाये से डॉ० वेद प्रकाश कंवर, डॉ० राम मोहन पाठक, सुश्री बी. एस.शांताबाई, डॉ०तारा सिंह, डॉ०सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'

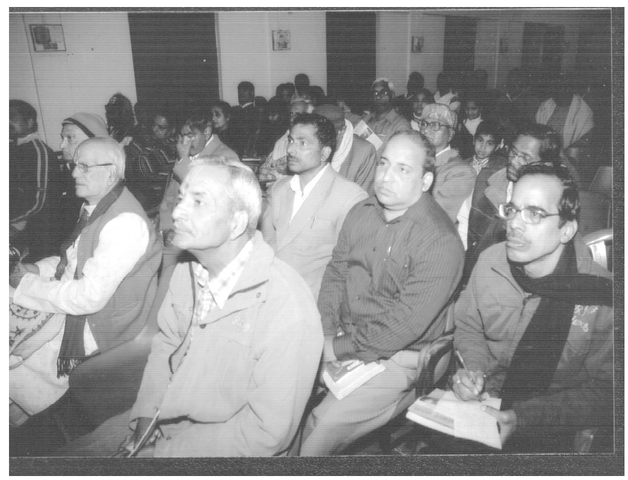

कार्यक्रम में उपस्थित साहित्यकार, पत्रकार

प्रथम सत्र में 'भ्रष्टाचार निवारण और साहित्यकारों की भूमिका' 'विषय पर आयोजित की गई. विदित हो कि परिचर्चा में पूर्व चयनित पांच विद्वजनों को ही मौका दिया जाता है. इस परिचर्चा में विवेक रंजन श्रीवास्तव, जबलपुर, म.प्र., श्री हरिहर चौधरी, अंजाम, उड़ीसा, वरिष्ठ समाज व चिन्तक रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद, आर.मुत्थुस्वामी, छत्तीसगढ़ ने भाग लिया.

प्रथम सत्र के दूसरे चरण में १५वर्ष तक की उम्र के बच्चों का बाल काव्य प्रतियोगिता आयोजित की गई. इस प्रतियोगिता में निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय की कृति केसरवानी प्रथम, कौशतुभ श्री तिवारी को द्वितीय और दरबारी इंटर कॉलेज की संस्कृति द्विवेदी को तृतीय स्थान मिला.

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कवि सम्मेलन में मु० चांद जाफरपुरी-कौशाम्बी, बबीता शर्मा, डॉ० अवधेश सिंह-गाजीपुर, डॉ० प्रमोद कुमार श्रोतिय-उत्तराखंड, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'-पटना, बिहार, डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल', विवेक रंजन श्रीवास्तव-जबलपुर, म०प्र०, शिवकरन सिंह-हमीरपुर, उ.प्र., डॉ० विजयालक्ष्मी रामटेके-नागपुर, महाराष्ट्र, आर.मुत्थुस्वामी-छत्तीसगढ़, हरिहर चौधरी-गंजाम, उड़ीसा, डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन', प्रदीप प्रचण्ड-बहराइच, उ.प्र., शिवानन्द सिंह सहयोगी-मेरठ, उ.प्र., डॉ० दुर्गाशरण मिश्र-इलाहाबाद, उ.प्र., मो० अन्सार शिल्पी-कौशाम्बी उ.प्र., राम लखन अनुरागी-इलाहाबाद, उ.प्र. आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया.

इसके बाद अलंकरण समारोह में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की प्रधान सचिव सुश्री बी.एस. षांताबाई का उनके द्वारा हिन्दी के प्रति किए गए उल्लेखनीय सेवाओं के लिए अभिनंदन किया गया. अभिनंदन पत्र संस्था सचिव डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने पढ़ी और कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० तारा सिंह ने संस्थान की तरफ से यह अभिनंदन पत्र भेंट किया. इस अवसर पर संस्थान द्वारा डॉ० वेदप्रकाश कंवर, व सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'-नई दिल्ली, हितेश कुमार शर्मा-बिजनौर, उ.प्र. को 'साहित्य गौरव', अशोक गुलशन, बहराइच, को 'काव्य रत्न', राम अवतार शर्मा-आगरा को 'राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान', हरिहर चौधरी, अंजाम उड़ीसा को 'हिन्दी सेवी सम्मान', शिवानंद सिंह सहयोगी-मेरठ, व श्री शिवकरन सिंह-पीलीभीत को 'विहिसा अलंकरण', डॉ० राम नारायण सिंह 'मधुर'-वाराणसी, व विवेक रंजन श्रीवास्तव-जबलपुर, को 'कैलाश गौतम सम्मान', डॉ० विजया लक्ष्मी रामटेके-नागपुर, महाराष्ट्र व प्रमोद कुमार श्रोतिय-पिथौरागढ़ को 'शिक्षकश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्र/छात्रा को दिया जाने वाला 'हिन्दी उदय सम्मान' इलाहाबाद की शिवानी श्रीवास्तव को दिया गया।

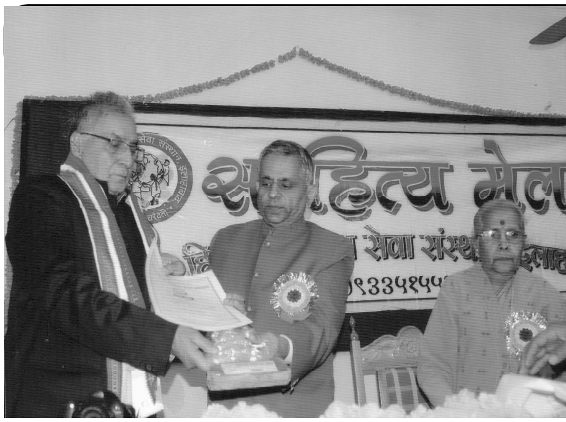

डॉ० वेद प्रकाश कंवर को साहित्य गौरव उपाधि प्रदान करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक व सुश्री बी.एस.शांताबाई

हितेश कुमार शर्मा को साहित्य गौरव की उपाधि प्रदान करते देते हुए डॉ० राम मोहन पाठक

डॉ० सुखवर्ष कंवर को साहित्य गौरव उपाधि प्रदान करते हुई सुश्री बी.एस.शांताबाई

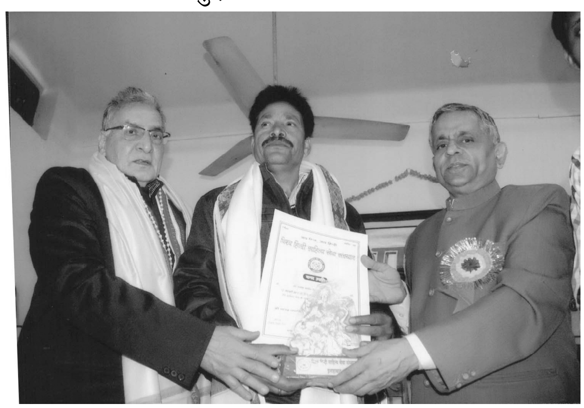

डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन' को काव्य रत्न की उपाधि प्रदान करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक व डॉ० वेद प्रकाश कंवर

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधानसचिव कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति एवं संपादिका हिन्दी प्रचार वाणी ने कहा-'हिन्दी साहित्य से ही समाज को दिशा मिलती है. आज युवाओं का झुकाव हिन्दी के प्रति हो रहा है. यह शुभ संकेत है लेकिन जिस अनुपात में होना चाहिए वह नहीं हो रहा है. युवाओं में विकृत हिन्दी का समावेश हो रहा है. जिसे हिग्लिश नाम से जाना जाने लगा है. यह हिन्दी के लिए कष्टकारी है.

कार्यक्रम का संचालन मो. अन्सार शिल्पी और संगीता बलवन्त ने किया. अतिथियों का स्वागत संस्थान के संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल ने किया. धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सचिव व कार्यक्रम संयोजक डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

डॉ० विजय लक्ष्मी रामटेको को शिक्षकश्री सम्मान प्रदान करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक, डॉ० वेद प्रकाश कंवर व महेन्द्र अग्रवाल

इस अवसर पर हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान के स्थानीय संपादक दयाशंकर शुक्ल 'सागर', अमर उजाला हिन्दी दैनिक के अनिल सिद्धार्थ, डॉ० वी.पी.सिंह, वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', नन्दलाल हितैशी, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, राजकिशोर भारती, नरेश पाण्डेय 'चकोर' पटना, गार्गी शरण मिश्र 'मराल, महेन्द्र कुमार, विनोद कुमार पाण्डेय, राजकुमार सिंह, संकल्प सिंह, सदाशिव विश्वकर्मा, लवकुश, मनमोहन सिंह कुशवाहा, पतविन्दर सिंह, अनसुइया अग्रवाल, दुकान जी, राम लखन अनुरागी, डॉ० अवधेश सिंह, श्रीमती बबीता शर्मा, संतोष शर्मा 'शान', आर.मुत्थुस्वामी, सुमित कुमार यादव, सहित सैकड़ों की संख्या में साहित्यकार व हिन्दी प्रेमी उपस्थित थे.

कैमरे की नजर में

शिवानंद सिंह सहयोगी को 'विहिसा अलंकरण' ग्रहण करते हुए

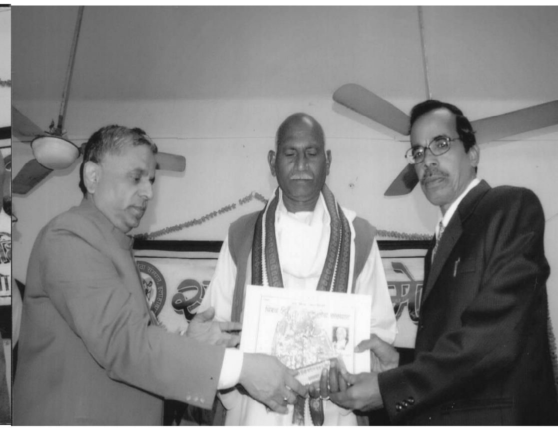

शिवकरन सिंह 'विहिसा अलंकरण' ग्रहण करते हुए

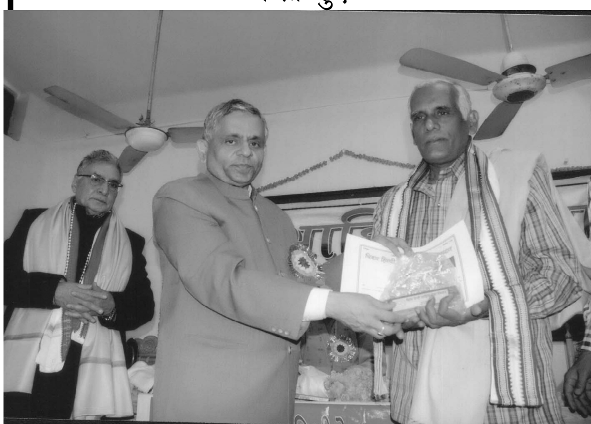

श्री हरिहर चौधरी हिन्दी सेवी सम्मान ग्रहण करते हुए

श्री प्रमोद कुमार श्रोतिय शिक्षकश्री सम्मान ग्रहण करते हुए

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव, जबलपुर, कैलाश गौतम सम्मान-११ ग्रहण करते हुए

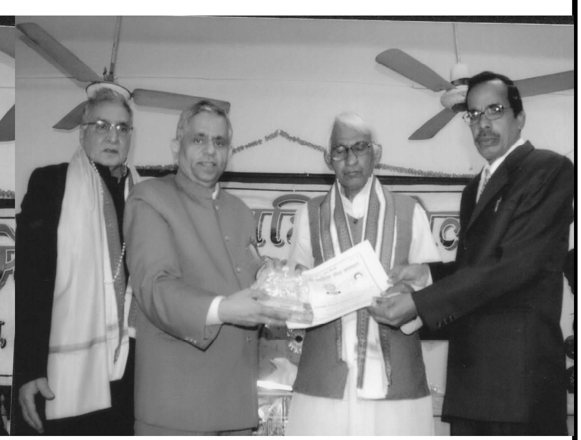

श्री रामनारायण सिंह मधुर, वाराणसी कैलाश गौतम सम्मान-१२ ग्रहण करते हुए

डॉ० राजबुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता:२०११ संतोष शर्मा 'शान को

किसी भी एक कहानी पर दिया जाने वाला डॉ० राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता में २०११ में संतोष शर्मा 'शान', हाथरस, उत्तर प्रदेश को प्रदान किया गया। इसमें ग्यारह हजार रुपये नगद, अंगवस्त्रम, प्रतीक चिन्ह व स्मृति पत्र प्रदान किया गया.

चित्र में यह सम्मान प्रदान देते हुए बायें से डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी व डॉ० राम मोहन पाठक.

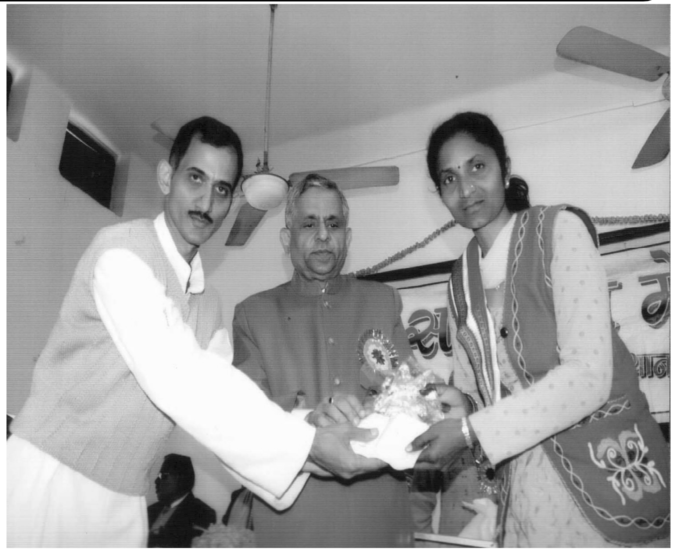

सभी पाठकों एवं देशवासियों को होली की हार्दिक बधाई

होटल गोल्डेन पैलेस

लजीज भोजन एवं स्वच्छ वातावरण में
रहने के लिए पधारें

- रहने एवम् खाने पीने की उत्तम व्यवस्था
- शादी-विवाह के लिए मैरिज हाल

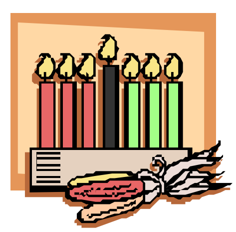

डॉ० काटजू रोड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

,y-vkbZ-th&93] uhe l=jkW; dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn&211011

अभिनंदन पत्र

१६.१२.१६३१ को हलियाल, कर्नाटक में स्व० भास्कर राव सिरसाट के पितृत्व व स्व० लक्ष्मीबाई भास्कर राव सिरसाट की कोख से जन्मीं कोंकणी भाषी साधारण नयन नक्श की स्वामिनी, कर्तव्यपरायणता, कर्मठता की मिसाल होने के साथ सुश्री बी.एस.शांताबाई मराठी, कन्नड़, हिन्दी भाषाओं की ज्ञाता भी हैं. आपने गोकर्ण क्षेत्र से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन से हिन्दी साहित्य प्रवीण, मैसूर विश्व. से परास्नातक हिन्दी की उपाधियॉ प्राप्त कीं. आपने टंकण अंग्रेजी, गर्ल गैड प्रशिक्षण, सितार वादन की भी शिक्षा ग्रहण की. आपकी बड़ी बहन स्व० बी.एस.मीराबाई एवं स्वतंत्रतासेनानी भाई स्व० शिवानंद स्वामी के मार्गदर्शन में १६५०-५५ तक घर में ही हिन्दी कक्षा चलाकर हजारों विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षा दी. १६५७ में आपने सरकारी प्राथमिकशाला में हिन्दी अध यापिका के रूप में कार्य किया. १६५८ का वर्ष हिन्दी जगत के लिए क्रांतिकारी व गौरवपूर्ण रहा जब दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रबल विरोध चल रहा था उस समय आपने कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्थापना में तन-मन-धन से अतुलनीय योगदान दिया. १६५५-७५ तक आपने कन्नड़ प्राईमरी स्कूल की संस्थापिका एवं मुख्य अध्यापिका के तौर पर योगदान दिया. दिन में स्कूल की नौकरी व सुबह-शाम हिन्दी की कक्षाएं चलाने का कार्य निरन्तर जारी रखा. १६७६ में आप कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के प्रधानसचिव के चयनित हुईं. १६६८ में समिति का भवन खरीदने के लिए दिन-रात परिश्रम करके धन जुटाया और बहन व भाई की मदद से भवन खरीदा. समिति में अवैतनिक रुप से कार्य कर कई जिलों में जमीन खरीदने, भवन खरीदने के लिए अथक परिश्रम करती रहीं. १६८० में अपनी बहन स्व. बी.एस.मीराबाई का संचित धन (१.५लाख रुपये) आपने समिति में नया भवन बनावाने में खर्च किया. कहते हैं कि किसी लक्ष्य व कार्य के प्रति समर्पित व्यक्ति का समय व उम्र से कोई वास्ता नहीं होता. वह कांटो की परवाह किये बगैर अपने पथ पर निरन्तर चलता रहता है. उसके मार्ग में धूप, गर्मी, बरसात रुकावट नहीं बन पाते. वेद का एक वाक्य है चरैवेति, चरैवेति. चरैवेति का पूर्णतः पालन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहने में उम्र के ८२वें पड़ाव में भी विराम नहीं लगाया जबकि लोग इस उम्र में धाराशायी हो जाते हैं.

विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी भाषण देने में निपुण सुश्री बी.एस.शांताबाई अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली की १६६८ से अब तक कार्यकारिणी समिति की सदस्या, १६६५-६८ तक संघ के सचिव पद को सुशोभित किया. १६७५-८५ तक श्री सिद्धारुठ स्वामी मठ हुबली की ट्रस्टी, १६८७-६० व १६६७-२००४ तक हिन्दी शिक्षा समिति, भारत सरकार की शिक्षा विभाग की सदस्या रहीं. आपने प्रथम व तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लिया. प्रचारक सम्मेलनों, हिन्दी कार्यकर्ता शिविरों में सक्रिय सहभागिता निभाने वाली सुश्री बी.एस.शांताबाई भारत सरकार के अधीन कल्याण मंत्रालय(१६६०-६३), विद्युतमंत्रालय(१६६२-६५), कोयला मंत्रालय (१६६३-६६), २०००-०४ तक केन्द्रीय हिन्दी समिति, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (१६६७-२०००), २००५ से जल संसाधन मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारित मंत्रालय, योजना मंत्रालय और सांख्यिकी कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति)(२०००-०३), खान मंत्रालय (२०१०-१३) की हिन्दी सलाहकार समिति की सदस्या रहीं. १६६८-२००० तक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की सदस्य पद को भी सुशोभित किया.

हिन्दी के प्रति आपके अपार स्नेह व लगन को देखते हुए १६८४ में हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद ने 'प्रतिष्ठित प्रचारक' की उपाधि, १६८६ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'महामहोपाध्याय', १६६१ में केन्द्रीय संस्थान आगरा से गंगा शरणा सिंह पुरस्कार (१०,०००रुपये), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने सौहार्द सम्मान (दस हजार रुपये नगद), दक्षिण साहित्य अकादमी, बेगलौर द्वारा अभिनंदन, हिन्दी शिक्षक बी.एड. कॉलेज बेंगलोर के छात्र संघ द्वारा अभिनंदन, माता कुसुम कुमारी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवक सम्मान ३५००/नगद, राष्ट्रभाषा प्रचार

समिति, वर्धा, महाराष्ट्र, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलूर द्वारा १९९१ व ९२ में, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ द्वारा रजत जंयती समारोह में उपराष्ट्रपति महामहिम शंकर दयाल शर्मा द्वारा, १९९३ में जिला परिषद, वर्धा, महाराष्ट्र द्वारा अभिनंदन, १९९४ में महाराष्ट्र हिन्दी अकादमी द्वारा 'महाराष्ट्र भारती अखिल भारतीय हिन्दी सेवा पुरस्कार ५००००/नगद के साथ, १९९७ में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के लिए, १९९८ में अरुणाचल नागरी संस्थान, ईटानगर द्वारा, १९९९ में स्व. डॉ. पी.आर.श्रीनिवास शास्त्री जी के अभिनंदन समारोह में, स्व० भीमसेन विद्यालंकार पंजाब की स्मृति में 'हिन्दी रत्न सम्मान' उपाधि (दस हजार रुपये नगद), २००० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा ५१वें अधिवेशन में 'साहित्य वाचस्पति', देवनागरी शासकीय प्रयोग शताब्दी समारोह समिति लखनऊ द्वारा महामना पं. मदन मोहन मालवीय पुरस्कार, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बेंगलूर द्वारा राजभाषा स्वर्ण जयंति वर्ष में दीर्घकालीन हिन्दी प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए, २००१ में श्री कृष्णकला साहित्य अकादमी, इन्दौर द्वारा, दि.जगन्नाथ टंकसाली प्रतिष्ठान, मुधोल, बिजापुर द्वारा सोने की अंगूठी प्रदान कर, कार्पोरेशन बैंक, बेगलूर द्वारा, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, जयनगर, बेगलूर द्वारा हीरक जंयति के अवसर पर विशिष्ट सम्मान, २००४ में श्री सदगुरु बाबा महाराज सेवा समिति, बेगलूर द्वारा, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद एवं कर्नाटक साहित्य अकादमी बेंगलौर द्वारा हिन्दी भाषा-कुंभ समारोह पर, संसदीय हिन्दी परिषद, राष्ट्रभाषा समारोह में राष्ट्रभाषा गौरव, संसद के केन्द्रीय कक्ष में, २००५ में श्री श्री श्री सिद्धारुढ स्वामी के अमृत महोत्सव के सुअवसर पर, शब्द साहित्य संस्था एवं कमला गोयंका फाउंडेशन द्वारा, २००६ में श्री पंचाक्षरी संगीत पाठशाला द्वारा स्व. पं. आर.वी.शेषाद्रिगवाय स्मरणार्थ प्रशस्ति पत्र, डॉ० के.आर.नारायणन फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा सुवर्णश्री गौरव पुरस्कार, कमल गोयंका फाउण्डेशन, महाराष्ट्र भाषा सभा, पुणे, स्व. पं. शेषाद्रि गवाय के स्मरणार्था 'गौरव प्रशस्ति', नागरी लिपि परिषद से २००५-०६ के 'विनोबा नागरी' पुरस्कार, २००७ में ८वें विश्व हिन्दी सम्मेलन- न्यूयार्क में, मल्होत्रा फाउण्डेशन ट्रस्ट से समाज सेवा के लिए डॉ. राजकुमार सम्मान, स्व. बी.एस.वेंकटराम कला भवन से अभिनंदन, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली द्वारा उत्कृष्ट हिन्दी सेवा के लिए, २००८ में विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा 'राष्ट्रभाषा सम्मान', तृतीय हिन्दी भाषा कुम्भ, बेंगलोर द्वारा 'अति विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान', बेंगलूर विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग एवं ज्ञानकिरण हिन्दी अध्यापक संघ के संयुक्त तत्वावधान में 'हिन्दी सेवी सम्मान', राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा 'विचार भूषण', राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मेरठ द्वारा 'हिन्दी रत्न', मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा, २००९ में डॉ. के.आर.नारायणन फाउण्डेशन द्वारा 'कर्नाटक सेवा रत्न', १७वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह, गाजियाबाद द्वारा प्रशस्ति पत्र, २०१० में वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन, ऋषिकेश, वैश्यवाणी समाज, विशप कॉटन कॉलेज द्वारा, अखिल भारत अहिन्दशक्ति परिषद से 'कर्नाटक सेवारत पुरस्कार' २०१२ में तमिलनाडु हिन्दी अकादमी, चेन्नै द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर आपको सम्मानित व अभिनदित किया जा चुका है.

विविध क्रियाकलापों को बखूबी अंजाम देते हुए आपने रचना संसार में भी महती भूमिका अदा की है. आपने हिन्दी से कन्नड़, कन्नड़ से हिन्दी, कुछ एकांकी संग्रह, गद्य-पद्य संग्रह, सप्त सुमन पी.यू.सी. पाठ्यपुस्तक की रचना की. कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की मुख पत्रिका हिन्दी प्रचार वाणी की १९८० से संस्थापक संपादिका का दायित्व निभाते हुए देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रचुर रूप से आपकी रचनाओं का प्रकाशन हुआ है. आपने देश-विदेश की पर्याप्त यात्राएं की हैं. इनमें १९९३ में भारत उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम, १९८६,९८,९९ में कनाडा, १९९३, २००२, ०५, ०७, ०८ में अमेरिका, कनाडा प्रमुख हैं.

सादा जीवन उच्च विचार की परिपोषिका गांधी विचारवादी, हिन्दी के प्रचार प्रसार व उत्थान के लिए आजीवन कुंवारी रहकर, पुरुष प्रधान समाज में इतना कुछ कर जाना महिला जगत के लिए ही नहीं बल्कि पुरुष जगत् के लिए भी एक मिसाल हैं. आपके बहुमुखी व्यक्तित्व, कृतित्व व हिन्दी के प्रति अपार स्नेह को देखते हुए ही विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का १००वां अंक आप पर केन्द्रित कर निकाला गया था.

ऐसी बहुमुखी प्रतिभा की धनी, हिन्दी के लिए जीने-मरने वाली सुश्री बी.एस.शांताबाई जी को 'नौवें साहित्य मेला' के अवसर पर 'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान' अभिनंदित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है.

दिनांकः १२ फरवरी २०१२

डॉ० तारा सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सचिव/कार्यक्रम संयोजक

काटो भरी है जिन्दगी गुलाब नहीं है

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कवि सम्मेलन में कौशाम्बी से पधारे मु० चांद जाफरपुरी ने कहा-

सारे जहां से आला ये मुल्क है हमारा।

पिथौरागढ़, उत्तराखंड से पधारे डॉ० प्रमोद कुमार श्रोतिय ने कहा-

मातृभूमि का यदि सम्मान नहीं कर सकते, तो अपमान नहीं करना।

जबलपुर, म.प्र. से पधारे डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल' ने कहा-

अलग हमारी रूप रंग है पर क्यारी एक है
मैं गीता हूं मै पूराण हूं मै बाइबिल हूं, अलग-२ है धर्म हमारा सबमें भाईचारे का कथन एक है।

हमीरपुर, उ.प्र. से पधारे शिवकरन सिंह ने कहा-

जागो मोहन भोर भई
आई नव उषा किरण नई।।

गंजाम, उड़ीसा से पधारे हरिहर चौधरी ने कहा-

भ्रष्टाचार की कराह, जय-जय करते लोग।

बहराइच, उ.प्र. से पधारे सुप्रसिद्ध कवि डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन' ने कहा-**कही उजड़ा चमन है तो कहीं दरिया भी है**

बहराइच, उ.प्र. से पधारे प्रदीप प्रचण्ड ने कहा-**कांटो भरी है जिन्दगी गुलाब नहीं है**

जब प्रजातंत्र के चीरहरण का अन्त हो।

इलाहाबाद से पधारे डॉ० दुर्गा शरण मिश्र ने कहा-

जब अहिंसा ही हिंसा होने लगी हो
जब प्रजातंत्र के चीरहरण का अन्त हो।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे मो० अन्सार शिल्पी ने कहा-**ओ कविते कैसे करूं? मैं तेरा श्रृंगार**
कथ्य-शिल्प-लय-छंद से, शिल्पी को दे वार।।

इसके अतिरिक्त विवेक रंजन श्रीवास्तव, जबलपुर, म०प्र०, श्रीमती बबीता शर्मा, गाजीपुर, डॉ० अवधेश गाजीपुर, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', पटना, बिहार, डॉ० विजयालक्ष्मी रामटेके, नागपुर, महाराष्ट्र, आर.मुत्थुस्वामी, छत्तीसगढ़, उ.प्र., शिवानन्द सिंह सहयोगी, मेरठ, उ.प्र., डॉ० राममोहन पाठक, वाराणसी, उ.प्र. राम लखन अनुरागी, ईश्वर शरण शुक्ल, इलाहाबाद, उ.प्र. आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया.

भ्रष्टाचार निवारण एवं साहित्यकारों की भूमिका

विवेक रंजन श्रीवास्तव,

देश के विकास, स्वस्थ्य लोकतंत्र के सुसंचालन, मानव अधिकारों की रक्षा में सूचना के अधिकार की भूमिका निर्विवाद एवं महत्वपूर्ण है. पारदर्शिता तथा सूचना की समुचित व्यवस्था से भ्रष्टाचार स्वयमेव नियंत्रित हो जाता है. हाल ही में कर्नाटक विधानसभा में जिस तरह का अनैतिक आचरण कुछ मंत्री करते विडियों में कैद हुए है वह सूचना तकनीक का समाज पर प्रभाव का नवीनतम उदाहरण है.

क्रय मूल्य से आधी कीमत पर ही वह वस्तु उपलब्ध हो सकती है यदि सूचना तंत्र सरल, सस्ता और सुलभ हो. सरकारी विज्ञापनों को यदि आम आदमी तक पहुचाने की व्यवस्था कर दी जाए तो जनता के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हो सके. विज्ञापन और सूचना के बारीक अंतर को समझने, परिभाषित करने और उनकी कीमतों में बदलाव करने की जरुरत है. लोकहितकारी सूचनाओं का प्रकाशन बहुत कम दरों पर की जानी चाहिए. ऐसा होते ही देश के आम आदमी के जीवन में बड़ा प्रत्यक्ष व दीर्घ कालिक परोक्ष बदलाव सुनिश्चित रूप से आयेगा और वहीं सूचना के अधिकार का सच्चा उपयोग होगा.

साहित्य सूचना का एक बड़ा संसाधन है. समाचार पत्र, पत्रिकाओं में जो कुछ प्रकाशित हो रहा है, जो कुछ लेखक, रचनाकार, पत्रकार लिख रहे हैं वह जनमानस तक नियमित रूप से पहुंच रहा है. लोग उसे पढ़ रहे है व सीख रहे हैं, उससे प्रभावित हो रहे हैं. आवश्यकता है कि लोकहितकारी सूचनायें सहज सुलभ हों. सूचना के अभाव के चलते ही अनेक विवादों का जन्म होता है और न्यायालयों में अनेक प्रकरण बढ़ रहे हैं.

अब समय आ गया है कि समाज और सरकार समय की मांग को समझे. सूचना तंत्र को संगठित, सुविकसित, सस्ता और सरल करने की आवश्यकता समाज के चौतरफा संतुलित विकास के लिए अनिवार्य है. सूचना के अधिकार के संरक्षण तथा सूचना के विस्तार में साहित्य की भूमिका अंतर्व्याप्त है. हमें इस अपार शक्ति और संभावना का सकारात्मक दोहन व उसका रचनात्मक विस्तार करने की जरुरत है.

❑ओ.बी-११, विद्युत मंडल कॉलोनी, रामपुर, जबलपुर, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

हरिहर चौधरी

हमारे जीवन के चार अविच्छेद्य पर्यायक्रम वर्ग-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है. इनमें से धर्म होता है हमारी नींव, जो आज गड़बड़ हो गई है. सहनशीलता का अनुभव नहीं है. पक्षपातिता पूर्ण अव्यवहारिक त्रुटि पूर्ण आईना कानून है. दूसरे वर्ग 'काम' और तीसरा 'अर्थ' इन दोनों के भंवर में गिर कर आदमी पथभ्रष्ट हो जाता है. भ्रष्टाचारी, असामाजिक इन्सान जो कुछ नया नहीं कर सकता है, न और किसी को नई दुनिया बसाने का मौका भी दे सकता है. सिर्फ दूसरों के पैर खींचना ही सैतानी-सुख समझता है. दूसरों की अड़चन बन जाता है. उसके विपरीत, जीवन की मूलधारा ही सब कुछ गंदगी, मैला और झाग को उर्वरता में बदल कर विशुद्ध पानी की भेंट देती हैं, जिसे पाकर प्यासे लोग तृप्त हो जाते हैं. आदमी समृद्ध हो जाता है. यह एक क्रांतिकारी चेतना है, जिसे साहित्यकार ही लोगों को सचेतन और आनंद प्रदान कर सकता है.

कुर्सी के ओहदे का रूक्ष प्रभाव जनता को गैरों की तरह व्यवहार करता है. इसका प्रमुख कारण अंग्रेजियत ही है.

पराई भाषा, चाल-चलन में सलंग्न रहकर जन सेवा` लिए तैनात प्रशासनिक अधिकारी देशीय जजबाती शून्य अंग्रेजी भाषा में हुकूमत चलाते आ रहे है. इसके निराकरण के लिए हमारी अत्यंत बहुजन कथित, सर्वजनबोध्य सर्व भारतीय भावों की प्रकाशिका हिन्दी भाषा का फौरन प्रचलन होना चाहिए. इसी प्रकार सहज सुलभ आतंरिक भाषा का कड़वा व्याकरण मुक्त, व्यवहार्य होना चाहिए. हिन्दी भाषा को राजनैतिक कुट-जाल से विमुक्त कीजिए.

हम क्षणिक पाशविक गर्मी में आत्मनिक्षेप करके सिर्फ पाप ही अर्जन करते हैं. आर्थिक भ्रष्टाचार से फाइल की गतिशीलता रूक जाती है या बढ़जाती है. इससे सृजनशील कवि साहित्यकार या पत्रकार ही आम आदमी को मुसीबतों से उबार सकता है. ओड़िसा के कवि सम्राट उपेन्द्रभंज की कहते है-'करि पिक कु मूक/मक मक शामुक'

यानी बरसात की ऋतु में कोयल को गूंगा बना कर मेढ़क घमंडी हो डिंग मारने लग जाता है. आज हमारे देश मे शिक्षित, सचेतन, कोमल भाषी प्रजा को चूप खामोश कराकर मेढ़क रूपी धूर्तो का ही सबकुछ चलता है.

भ्रष्टाचार के निवारण के लिए गुरू-छात्र संपर्क में सुधार लाना चाहिए. व्यवसायिक शिक्षा पद्धति पर सुधार पाबंदी लगाना चाहिए. असंगत आरक्षण प्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए. समृद्ध राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाएं, साहित्यिक किताबों के पाठ के लिए ग्राम्य-शहरी पाठागारों की सुलभ व्यवस्था होनी चाहिए. खेलकूद की निरपेक्ष व्यवस्था और पढ़ाई की एक रुपता तथा नैतिक आधारित होनी चाहिए.

सम्मान, इज्जत के साथ जीना और जीने देने से ही भ्रष्टाचार मुक्त देश होगा.

❑सेवानिवृत्त प्रधान शिक्षक, हिंजिलिकाटु, गंजाम, ओडिशा

+++++++++++++++++++++++++++++++++++++

रामकृष्ण गर्ग

भारत वर्ष में भ्रष्टाचार का सबसे पहला कारण यहां का चुनाव प्रणाली है. चुनाव मत संकलन न होकर मत खरीदना हो गया है. इसके लिए धन-बल, जन-बल, बुद्धि-बल का प्रयोग किया जाता है. जो भी व्यक्ति चुनाव लड़ता है वह देश के हित में न सोचते हुए स्व-हित में सोचता है और कई तरह के हथकण्डे अपनाता है.

दूसरा कारण वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन-पहला कदम चुनाव व्यक्तिगत खर्चे पर न होकर राष्ट्र के खर्चे पर सम्पन्न कराया जाना चाहिए और चुनाव व्यक्ति न लड़कर, दल लड़े. राष्ट्रीय पार्टिया अपना चुनावी एजेंडा देकर चुनाव लड़े. मतदान का जितना प्रतिशत उस दल को प्राप्त हो उस हिसाब से पहले से चयनित प्रत्याशियों को चयनित किया जाए. इससे बुद्धिजीवी वर्ग का व्यक्ति आगे आयेगा और बाहुबलियों से छुटकारा मिलेगा.

तीसरा कारण भ्रष्टाचार की गंगोत्री ऊपर से चलकर नीचे को बहती है. अगर ऊपर से गंदा पानी आ रहा है तो नीचे आप चाहे जितनी सफाई रक्खें वो गंदगी तो बनी रहेगी.

चौथा कारण आम आदमी न तो जन्म से भ्रष्ट होता है और न वो भ्रष्टाचार करना चाहता है, पर परिस्थितियां उसको ऐसा करने पर मजबूर करती हैं.

❑सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं चितंक,निकट हनुमान मंदिर, ४१बी/२ए, साकेत नगर, धूमनगंज, इलाहाबाद

+++++++++++++++++++++++++++++++++++++

आर.मुत्थुस्वामी

यदि हम ईमानदार हैं तो हमारे कर्मो में भी ईमानदारी का गुण आ जाता है. कर्त्तव्यनिष्ठा में बल मिलता है. अच्छे काम करने के लिए साहस मिलता है. चारो ओर सच्चाई की खुशबू और महक हर इन्सान को सूंघने को मिलेगी.

भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों में जागृति ला सकते हैं. आजादी की लड़ाई में भी साहित्यकारों की महति भूमिका रही है. भारत-चीन, भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय भी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश को जगाया. साहित्यकारों को चाहिए कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध रचनाएं लिखें. समाचार पत्रों में अनेक भ्रष्टाचारियों के बारे में खूब लिखा जा रहा है.

❑सुन्दर नगर, कोहका, भिलाई दुर्ग, छ.ग.

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

हितेश कुमार शर्मा

जब कलियुग का पर्दापण हुआ तब राजा परीक्षित ने उसे स्वर्ग में वास करने की अनुमति प्रदान कर दी और तब से कलियुग का सर्वाधिक प्रभाव स्वर्ण में ही हैं. भ्रष्टाचरण निवारण के लिए-चुनाव प्रणाली में सुधार, पूरे देश में एक कानून, पुलिस के कार्यो में राजनैतिक हस्तक्षेप बंद होना चाहिए, तुष्टिकरण को बंद किया जाना चाहिए, पुर्नियुक्ति पर रोक, राजनीतिक पार्टियों की रैलियां और आन्दोलन पर भी प्रतिबंध होना चाहिए, अफसरों की भी वार्षिक सम्पत्ति का वार्षिक आंकलन होना चाहिए, ठेकेदारी प्रथा का अंत, भ्रष्टाचारियों को उनके दुष्कृत्य के अनुरुप ही दण्ड मिलना चाहिए.

❑गणपति भवन, सिविल लाइन्स, बिजनौर-२४६७०१, उ.प्र.

❑

बाल काव्य प्रतियोगिता

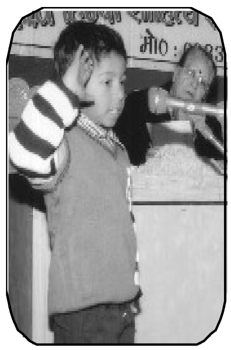

साहित्य मेला के अवसर पर १५वर्ष से कम उम्र के बच्चों का एक बाल काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें सुमित कुमार यादव, प्रिया मिश्रा, स्नेहिल सिंह, साक्षी सिंह, नीतू यादव, कौस्तुभ श्री तिवारी, संस्कृति द्विवेदी, उमा वर्मा, कृति केशरवानी, शुभम वर्मा, श्रृष्टि मिश्रा, कोमल कुमारी, अभिषेक जायसवाल, कुशाग्र सिंह, रिया जायसवाल, परख सिंह आदि बच्चों ने सहभागिता निभाई. ये बच्चे इलाहाबाद, गाजीपुर, देवरिया जिले के थे.

मीडिया फोरम द्वारा पत्रकारों व समाज सेवियों का सम्मान

डॉ० मो० सुहैल को साहित्य गौरव की उपाधि से विभूषित करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक व महेन्द्र कुमार अग्रवाल

श्री सत्य प्रकाश को समाज गौरव से विभूषित करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक व डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मीडिया को वास्तविक चौथा स्तम्भ का सम्मान दिलाने को प्रयासरत मीडिया फोरम ऑफ इंडिया सोसायटी द्वारा अपनी प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर डॉ० राममोहन पाठक, निदेशक मदन मोहन मालवीय हिन्दी पत्रकारिता संस्थान, वाराणसी, श्री सचीन्द्र श्रीवास्तव, कार्यकारी संपादक युनाइटेड भारत, हिन्दी दैनिक, इलाहाबाद, को पत्रकार गौरव की मानद उपाधि से विभूषित किया गया. यही नहीं समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ० बालकृष्ण पाण्डेय अधिवक्ता, हाईकोर्ट इलाहाबाद, डॉ० मोहम्मद सुहैल, पूर्व विभागाध्यक्ष रसायन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सत्यप्रकाश, निदेशक आस्था सामाजिक संस्थान, इलाहाबाद, एम.कलाम.राईन, पत्रकार एवं समाज सेवी को समाज गौरव की मानद उपाधि से विभूषित किया गया.

९वें साहित्य मेला के अवसर पर आयोजित इस सम्मान समारोह में बोलते हुए **फोरम के अध्यक्ष गोकुलेश्वर द्विवेदी** ने कहा-'राष्ट्र का चौथा स्तम्भ कहलाने वाला पत्रकार क्या वास्तव में अन्य तीनों स्तम्भों के समान सशक्त, संरक्षित एवं सम्माननीय है? क्या पत्रकारों को भी सभी सुविधाएं सुलभ है? नहीं? तो क्यों? आईयें हम सभी पत्रकार बन्धु मिलकर अपनी आवाज को बुलन्द करें. मीडिया फोरम से जुड़ें और मिलकर एक पत्रकारों के हितों के लिए बुलन्द आवाज उठायें.'

फोरम के महासचिव महेन्द्र कुमार अग्रवाल ने कहा-'फोरम का मुख्य उद्देश्य पत्रकारों के लिए निःशुल्क

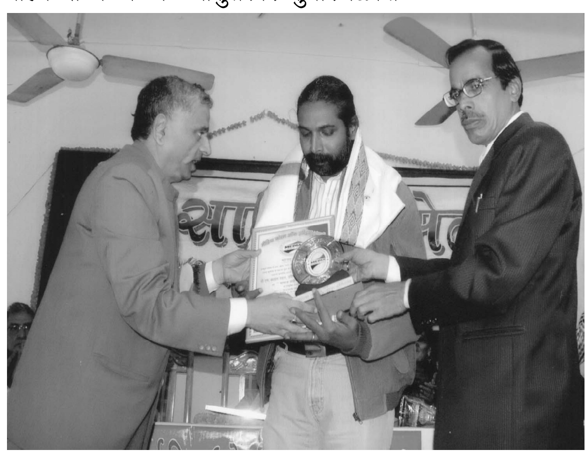

एम.कलाम.राईन को विभूषित करते हुए डॉ० राम मोहन पाठक व महेन्द्र कुमार अग्रवाल

चिकित्सा सुविधा, आवास, समाचार संकलन हेतु निःशुल्क ट्रेन/बस यात्रा पास, वृद्ध पत्रकारों को मासिक आर्थिक मदद दिलवाने हेतु संघर्ष करने, पत्र-पत्रिकाओं को समय-समय पर निःशुल्क शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन करके सहयोग मार्ग दर्शन करने, आर.एन.आई, डीएवीपी के नियमों की जानकारी प्रदान करें, पत्रकारों और संपादकों के हितों के लिए सघर्ष करने, कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए इस फोरम का गठन किया गया है. फोरम ने एक वर्ष अन्तराल में ही कई लड़ाइया लड़ी हैं. हम आगे और जोश से अपने कदम को आगे बढ़ायेंगे. यही हमारा प्रयास होगा.

स्वर्ग विभा द्वारा डॉ० तारा सिंह सम्मान

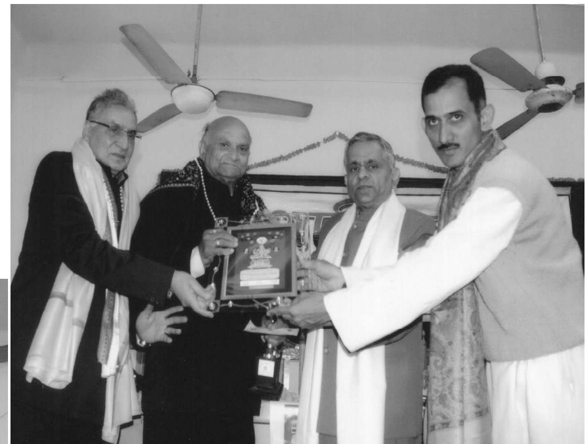

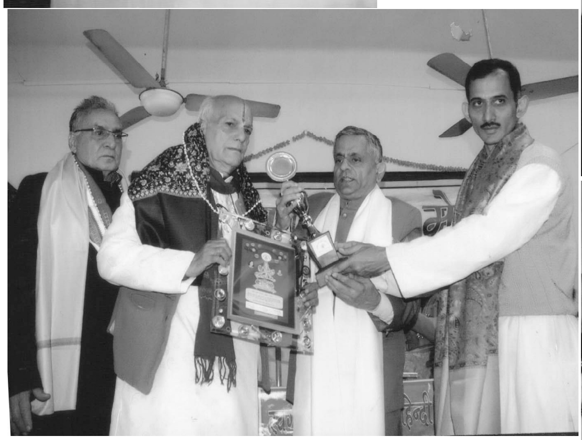

९वें साहित्य मेला के अवसर पर डॉ० तारा सिंह सम्मान से कुमार शर्मा 'अनिल'-चंढ़ीगढ़, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'-पटना, बिहार, गार्गी शरण मिश्र 'मराल'-जबलपुर, म.प्र., डॉ० अनसूइया अग्रवाल, छत्तीसगढ़, कमल कपूर, फरीदाबाद, हरियाणा सम्मानित किया गया. इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० राम मोहन पाठक, विशिष्ट अतिथि डॉ०वेद प्रकाश कंवर, व डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को स्वर्ग विभा की अध्यक्ष डॉ० तारा सिंह द्वारा साल ओढ़ाकर सम्मानित किया.

सभी पाठकों ९वें साहित्य मेला व होली की हार्दिक शुभकानाएं मो0 9305522133

पिया पान भण्डार

शुद्ध लजीज पान के लिए पधारें

45, बड़ी स्टेशन, लीडर रोड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्मानार्थ प्रविष्टियॉं आमन्त्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

डॉ.किशोरी लाल सम्मान-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में

प्रवासी भारतीय सम्मान-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हो. एक रचना तीन प्रतियां

हिंदी सेवी सम्मान-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

राजभाषा सम्मान-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में

राष्ट्रभाषा सम्मान-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियो में

युवा कहॉनीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-सम्बन्धित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

कला/संस्कृति सम्मान-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में

बाल साहित्यकार सम्मान-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए,

पुलिस हिंदी सेवा सम्मान- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियो में

सांस्कृतिक विरासत सम्मान- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

विधि श्री-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में

डॉक्टरश्री-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

शिक्षक श्री-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

सैनिक श्री-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विज्ञान श्रीः विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

प्रशासक श्री-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विहिसा अलंकरण-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी.

साहित्य के क्षेत्र मेंः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

समाज सेवा के क्षेत्र मेंः समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाज गौरव

विशेषः१. प्रविष्टि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जबाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा

पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तके/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं के साथ मोलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...
.सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ....
पिता/पति का नामः...
पताः...
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..
विधा....................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियां..............
धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................संख्या.......................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें मान्य करता/ करती हूं

प्रस्तावक
नाम..............................
पूरा पता.......................
हस्ताक्षर..........................

भवदीय
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति
०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक
०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

मुद्दा

क्यों खिलौना बनी हुई है मुस्लिम महिला

✍गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

इस्लाम धर्म के अनुयायी स्त्रियों की जितनी दुर्दशा आज हो रही है उतनी दुर्दशा किसी अन्ध धर्म की महिलाओं की नहीं. दहेज आदि की प्रथा जो इस्लाम में वर्जित है वह भी अपनी चरम सीमा पर हे परन्तु इसके अतिरिक्त क्या इस्लाम धर्म की तलाक की रीति उचित है. इस्लाम धर्म में शायद शादी और स्त्री खिलौना जैसी वस्तु है. जिसे जब चाहा तीन बार तलाक कह कर दुध में मक्खी की तरह निकाल कर छुटकारा पा लिया. क्या पवित्र कुरआन में यही नियम बताया गया है कि स्त्री खिलौना मात्र है. उसका स्वयं पर कोई अधिकार नहीं है. सबसे अधिक भयानक और दिल दहलाने वाली बात यह है कि तलाक़ के बाद अपनी भूल का एहसास होने पर पुनः विवाह करने के लिए स्त्री पहले किसी दूसरे से शादी करे, कम से कम एक रात उसके साथ गुजारे तब जाकर वह अपने पूर्व पति का प्रेम पाने की अधि ाकारी हो सकती हैं. क्या यह एक स्वाभिमानी स्त्री के लिए सम्भव है?

इस विषय पर परमेश्वर ने कुरआन में किया है. इतना ही नहीं एक पूरी सूरः(अध्याय) का नाम ही तलाक़ रक्खा है. जबकि इतने विस्तार से कुरआन में नमाज, रोज़े, और ज़कात का वर्णन भी नहीं मिलता. नमाज़, रोज़े और ज़कात के आदेश तो कुरआन में है परन्तु उनके नियम और तरीके परमेश्वर ने अपने सन्देशी जगत हितैषी मोहम्मद के द्वारा इंसानो को सिखाए है. नमाज़, रोजें और ज़कात के विषय परमेश्वर की बंदगी से है. इनमें किसी प्रकार की कमी और गल्ती को वह दयावान परमेश्वर नित् क्षमा करने को तैयार रहता है. परन्तु तलाक़ का सम्बंध दो इंसानो के मध्य स्थापित होने वाले रिश्ते से हैं. यदि एक इंसान दूसरों के अधिकारों का हनन करेगा, उसे सताएगा एक दूसरे पर अत्याचार करेगा तो परमेश्वर उसे क्षमा करने के बजाए निर्णय के दिन उन दोनों का हिसाब आपस में कर्मो के आदान-प्रदान द्वारा चुकता कराएगा. विवाह दो इंसानों अर्थात एक स्त्री ओर एक पुरुष के मध य बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक संबंध है जो कम से कम दो गवाहों की उपस्थिति में परमेश्वर के नाम से स्थापित किया जाता है. पुरुष द्वारा स्त्री की समस्त जिम्मेदारियां कुबूल की जाती है. इंसान के मुख से निकलने वाले कुबूल करने के दो बोल परमेश्वर के निकट इतने महत्वपूर्ण हे कि दो शरीर सदैव के लिए एक पवित्र बंधन में बंध जाते है. परमेश्वर ने स्त्री का सम्मान बढ़ाने का अवसर निकाह के समय भी छोड़ा नहीं. उसने पुरुष को आदेशित किया है कि निकाह के उपरान्त भी बिना उसे कुछ उपहार दिये तुम उसे हाथ नहीं लगा सकते. इसी उपहार का नाम महर है जो स्त्री का अधिकार है और निकाह के समय ही निर्धारित कर दिया जाता है. यह उसे अवश्य ही दिया जाना चाहिए जो नहीं देता वह परमेश्वर के नियमों को तोड़ता है.

जीवन के अन्य सम्बंधो और क्षेत्रों की भांति दाम्पत्य जीवन में भी मन मुटाव और कहा-सुनी होना स्वाभाविक ही है परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि तलाक़ द्वारा सम्बंध तोड़ लिए जाये. तलाक़ परमेश्वर के निकट अत्यंत घृणात्मक कार्य है. तलाक़ की अनुमति परमेश्वर ने दी अवश्य है परन्तु उससे बचने की प्रेरणा और तलाक़ दिये जाने के तरीकें अनेक प्रतिबंधो के साथ विस्तार पूर्वक कुरआन में बताए हैं कहा गया है कि मन-मुटाव की स्थिति आने पर भावुकता में न बहो, एक दूसरे को समझने का प्रयास करो. यदि स्थिति में सुधार न हो सके तो दोनों ओर के निकट सम्बंधी प्रयास करें कि एक दूसरे के विरोधों को शान्तिपूर्वक समझा बुझा कर समाप्त करा दें. इस पर भी यदि बात न बने और सम्बंध तोड़ना अनिवार्य ही प्रतीत हो तो मात्र एक बार शब्द 'तलाक' का प्रयोग करके शारीरिक सम्बंध तोड़ लिये जायें परन्तु स्त्री को इद्दत की अवधि तक उसी घर में सारी सुविध ााओं सहित सम्मानपूर्वक रखा जाय. मात्र एक बार 'तलाक' शब्द का प्रयोग करने की स्थिति में यह अधिकार बना रहता है कि जब गुस्सा ठंडा पड़ जाय और पुनः सम्बंध जोड़ने की ईच्छा हो तो पुनः सम्बंध दो गवाहों की उपस्थिति में जोड़ लिए जायें. यह 'तलाक' शब्द बोलने का समय भी निर्धारित कर

दिया गया है. जब स्त्री अपने मासिक रक्त प्रवाह के उपरान्त स्नान कर ले और स्नान के बाद शारीरिक सम्बंध स्थापित न किए गए हो तब ही इस शब्द को प्रयोग किया जाए.

इस प्रकार प्रथम तलाक़ और पुनः सम्बंध स्थापित हो जाने की स्थिति मे यदि फिर ऐसा अवसर आ जाय कि दाम्पत्य जीवन दुर्लभ हो जाय तो एक अवसर और दिया गया है कि पहले की भांति एक बार शब्द 'तलाक' का प्रयोग करके संबंध तोड़ जा सकते है और पुनः सम्बंध स्थापित करने का अधिकार भी बना रहता है.

परन्तु तीन बार 'तलाक' शब्द का वृतांन्त कर देने के उपरान्त पुरुष को दण्ड स्वरुप यह आदेश दिया गया है कि अब वह स्त्री से सम्बंध स्थापित करने योग्य नहीं रह गया. इस प्रतिबंध ा के द्वारा भी स्त्री का सम्मान बढ़ाया गया है. क्योंकि परमेश्वर द्वारा दो अवसर और ऐसे आसान तरीक़े पर सम्बंध विच्छेदित करने की सहूलियत प्रदान किये जाने पर भी जो व्यक्ति हठधर्मी और अवहेलना का मार्ग अपनाए पत्नी का सम्मान न करें, और तीन बार से कम 'तलाक' शब्द का प्रयोग किए बिना न माने वह इस काबिल नहीं है कि कोई स्वाभिमानी स्त्री पुनः उसकी पत्नी बन सके.

इस्लाम विश्व व्यापी जीवन यापन का मार्ग निर्दिष्ट करता है उसके नियमों में ऐसी लचक है कि प्रत्येक क्षेत्र और काल में कोई इंसान उसका पालन करने में कठिनाई का आभास नहीं करता. यही कारण है कि अपरिहार्य विशेष परिस्थितियों में तीन तलाक के उपरान्त भी पुनः वैवाहिक सम्बंध स्थापित करने का एक द्वारा खुला रखा गया है. इसका तात्पर्य यह नहीं कि तलाक़ को खिलवाड़ बना लिया जाए और अपरिहार्य परिस्थितियों की एक विशेष सुविधा को स्त्री के अपमान का साधन बना लिया जाए. जो भी ऐसा करेगा वह परमेश्वर के नियमों का अर्थात् क़ुरआन का उल्लंघन करेगा.

आज, तलाक़ के जिस रुप को आपत्तिजनक और चिन्ताजनक मानते है वह वास्तव में इस्लाम का तरीका नहीं है. इस्लाम ने तलाक़ का जो तरीका विशेष परिस्थितियों में बताया है उस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती. आज तलाक़ के तीन वृतान्त को सामान्यतः प्रयोग किया जा रहा है वह निःसन्देह दण्डनीय कार्य है. इस्लाम के आरम्भिक दिनों में जब परमेश्वर के नियमों की सत्ता स्थापित थी और हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा थे, जो स्वयं भी परमेश्वर के नियमों का पालन करते थे और जनता को भी उनके उल्लंघन पर दण्ड देते थे. उनको यदि सूचना मिलती थी कि किसी ने अपन पत्नी को क़ुरआन के विरूद्ध तीन बार तलाक दी है तो उस व्यक्ति को कोड़े लगवाते थे.

तीन तलाक़ के उपरान्त पुनः विवाह के उद्देश्य से किसी अन्य व्यक्ति के साथ स्त्री का निकाह कराना और रात गुज़ारना स्त्री के स्वाभिमान को ललकारना और परमेश्वर की विशेष परिस्थिति हेतु दी गई अनुमति का मज़ाक उड़ाना है. यह अनुमति केवल उस स्थिति में हे जब तलाक़ के बाद वह स्त्री किसी अन्य पुरूष से विवाह करके सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हो और बिना किसी योजनाबद्ध कार्यक्रम के उस पति से भी उसका दाम्पत्य जीवन बिखर जाय या उस पति की मृत्यु हो जाए. तब पहला व्यक्ति पुनः उस स्त्री से विवाह का प्रस्ताव करे और स्त्री उसे स्वीकार कर ले तब ऐसी परिस्थिति में उन्हें पुनः विवाह की अनुमति दी गई है. परन्तु वह तरीक़ा जो आजकल मुसलमानों द्वारा व्यवहार में लाया जा रहा है, और जो आम आदमी के लिए चिन्ता का विषय बना है, निःसंदेह घृणीय और अपमान जनक है. यह इस्लाम का तरीक़ा नही हैं, यह परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन है. उसके आदेशों की अवहेलना और क़ुरआन में वर्णित निर्देशों का मज़ाक़ उड़ाने के समान है.

प्रश्न यह उठता है कि 'तलाक' परमेश्वर के निकट एक घृणीय कार्य है तो इसकी अनुमति क्यों दी गई? इस प्रश्न को भी इस्लाम की व्यापकता के परिपेक्ष में समझना सरल होगा. कभी-कभी विवाह द्वारा ऐसे स्थानों पर सम्बंध जुड़ जाते है जहॉ दाम्पत्य जीवन का निभाना वास्तव में कठिन हो जाता है. दोनों पति-पत्नी में से किसी एक का शारीरिक रूप से अपूर्ण होना, मानसिक रूप से अस्वस्थ होना, विचारों में अत्याधिक विरोध होना आदि परिस्थितियों में कभी-कभी सम्बंधो का निभाना दुर्लभ हो जाता है. शरीर में उत्पन्न किसी विकार को ठीक करने के लिए कभी-कभी आपरेशन आवश्यक होता है जिस के लिए अस्पताल या नर्सिंग होम में आपरेशन कक्ष का होना भी आवश्यक होता है. यदि किसी अस्पताल और नर्सिंग होम में आपरेशन कक्ष न हो तो कोई समझदार व्यक्ति ऐसे अस्पताल और नर्सिंग होम को अपूर्ण की उपाधि देगा क्योंकि वहॉ उस के विकार दूर करने के साधन उपलब्ध ा नहीं है. आपरेशन को अच्छी क्रिया नहीं, हर व्यक्ति आपरेशन नहीं कराता मगर आपरेशन कक्ष की सुविधा उपलब्ध ा कराना अस्पताल के लिए आवश्यक होता है. इसी प्रकार जिन क़ौमों में तलाक़ सुविधा का प्रचलन नहीं है, उनके यहॉ बहुधा पत्नी से छुटकारा प्राप्त करने के लिए उन पर अन्याय और अत्याचार के पहाड़ तोड़े जाते हैं. घर से जीवित अवस्था में निकालने में असमर्थ होने के कारण कभी उनके साथ दासियों से बद्तर व्यवहार किया जाता है और कभी मौत के घाट उतार

दिया जाता है. अतः इस्लाम द्वारा दी गई तलाक़ की अनुमति पूर्ण न्यायोचित है. इस प्रकार पुरूष स्त्री की हत्या करने को बाध्य नहीं होता.

प्रश्न उठता है कि यह अधिकार स्त्री को क्यों नहीं दिया गया. उत्तर में कहा जा सकता है कि स्त्री को इस अधिकार से वंचित नहीं रखा गया है किंतु उस के विषय में 'तलाक' का स्वरुप थोड़ा भिन्न अवश्य है. सर्वमान्य सत्य है कि स्त्रियां पुरूष की अपेक्षा अधिका भावुक होती है. ओर यह उनकी विशेषता है कमज़ोरी या कमी नहीं है. उन्हें जिस प्रकार की ज़िम्मेदारियॉं निभानी होती है उनमें भावुकता का गुण अधिक मात्रा में न होता तो रोते हुए बच्चों को रसोई से भाग कर चुप कराना, और गन्दगी में लिथड़े हुए लाल को सीने से लगाना उनके बस का न होता. भावुकतता के कारण ही तनिक ग़लती पर गुस्से की हालत में अपने चहीते लाडले को कोसना और उस के मर जाने तक की बद दुआ दे डालना किस से छिपा है? परमेश्वर जो स्त्री पुरूष सबका रचयिता है वह पूर्ण रूप से अपने बन्दों के हितों को जानता है उसने तलाक के मार्ग को द्विदिशा मार्ग (टू वे ट्रैफिक) नहीं बनाया. यदि ऐसा किया होता तो दुर्घटनाओं के अवसर बढ़ जाते और छोटी-छोटी बातों पर तलाक़ होती नज़र आती. क्या पाश्चात्य देशों में पति के तेज़ ख़र्राटों और सिगरेट की बदबू पसन्द न होने के कारण स्त्रियों द्वारा तलाक के समाचार इसका प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं. अतः इस्लाम स्त्रियों को तलाक़ लेने का अधिकार तो देता है परन्तु उसकी मांग वह शरई अदालत के माध्यम से ही कर सकती है. शायद अपने आपको कट्टर मुस्लिम कहने वाले मुस्लिम भाई अगर कुरआन की रियायतों का ही अध्ययन करें तो उन्हें समझ में आ जाएगा.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप.........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.

अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें

नाम :...

पिता / पति का नाम :...

पता :..

डाकखाना :..जनपद..

राज्य :...पिन कोड...

दूरभाष / मो0..ईमेलः...

<u>विशेष नियमः</u>

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें

03 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259
आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875
में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है। विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	रु055 /
वार्षिक	रु0 110 / –	रु0600 /
पॉच वर्ष :	रु0 500 / –	रु0700 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	रु05870 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	रु026700 /

समाज के सहयोग के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते

सीताराम गुप्ता, दिल्ली

कुछ लोग शिकायत करते हैं कि हमें अपने माँ-बाप से विरासत में कुछ नहीं मिला। वो अपने आप को **सेल्फ मेड** कहते और मानते हैं। यह मात्र भ्रम ही नहीं अहंकार भी है। एक और प्रश्न उठता है कि क्या मात्र धन-दौलत अथवा पैसा ही वास्तविक विरासत है। कुछ लोगों को माँ-बाप से ही नहीं पूरे समाज से शिकायत होती है। उनका कहना है कि दुनिया ने उनके लिए कुछ नहीं किया। उनके लिए सबकी जिम्मेदारी होती है लेकिन वे ख़ुद किसी के लिए जिम्मेदार नहीं होते। वो कभी ये सोचने की ज़हमत नहीं उठाते कि उन्होंने समाज के लिए क्या किया है अथवा करना चाहिए।

यह सही है कि आपने स्वयं अपना विकास किया। आपने अपने समय का सदुपयोग किया, ख़ूब मेहनत करके पढ़ाई की लेकिन एक विद्यार्थी को भी पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के लिए कापी-किताब और क़लम-दवात आदि न जाने कितनी चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है जिसके लिए वह दूसरों पर निर्भर होता है। यह ठीक है कि आपने पुरुषार्थ किया और एक अच्छी सी नौकरी पा गए अथवा अपना एक अच्छा सा व्यवसाय स्थापित कर लिया। यदि आप पुरुषार्थ नहीं करते तो आपका ही अहित होता। पुरुषार्थ करके आपने अपने लिए अच्छा किया लेकिन क्या इसके पीछे किसी उत्प्रेरक तत्त्व ने काम नहीं किया? क्या अनेक व्यक्तियों और समाज ने आपको आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध नहीं कराए?

बड़ी-बड़ी चीज़ों की बात छोड़िये छोटी-छोटी चीज़ों और ज़रूरतों के लिए भी हम दूसरों पर निर्भर होते हैं। एक मामूली सी लगने वाली क़मीज़ जो हमने पहन रखी है उसे हमारे तन पर सुशोभित करने में सैकड़ों लोगों का योगदान है। खेत में बीज बोने से लेकर पौधे उगने और उनसे कपास मिलने तथा कपास से कपड़ा और क़मीज़ बनने के बीच असंख्य हाथों का परिश्रम है। कपड़े से क़मीज़ बनाने के लिए एक सिलाई मशीन की ज़रूरत पड़ती है। वह लोहे तथा अन्य कई पदार्थों से बनती है। खनिकों द्वारा लोहा और अन्य खनिज पदार्थ खानों से निकाले जाते हैं। बड़े-बड़े करखानों में मजदूरों द्वारा लोहा साफ किया जाता है। फिर दूसरे बड़े-बड़े करखानों में लोहे से बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा छोटी मशीनें बनती हैं। उन्हीं में से एक मशीन पर कारीगर कपड़े से एक अच्छी सी क़मीज़ सिलकर आपको पहनाता है। अब ज़रा सोचिये कि यदि क़मीज़ में बटन न लगे हों तो कैसा लगे। एक बटन जैसी अल्प मूल्य की वस्तु भी ऐसे ही नहीं बन जाती। उसके लिए भी न जाने कितने हाथों के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। एक बटन टाँकने के लिए जो सबसे ज़रूरी यंत्र है वह है सुई। कहते हैं सुई से लेकर जहाज़ तक यानी सुई को सबसे तुच्छ वस्तु समझा जाता है लेकिन उसी सुई के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हाँ इस छोटी सी तुच्छ चीज़ को तो आप अवश्य ही स्वयं बना लेते होंगे? इसके लिए तो आपको न कच्चे माल की ज़रूरत है और न कल कारखानों की और न कुशल कारीगरों की। नहीं मित्र ऐसा नहीं है।

चलिए मान लेते हैं कि समाज ने आपको कुछ नहीं दिया। यहाँ सब स्वार्थी हैं। बिना कारण कोई किसी को कुछ नहीं देता। लेकिन एक जगह है जहाँ से आपको बहुत कुछ मिलता है और वो भी उपयोगी और बिलकुल मुफ़्त। प्रकृति तो हमें बहुत कुछ देती है पर हम उसे क्या देते हैं सिवाय उसे प्रदूषित और नष्ट करने के। फिर समाज को भी प्रदूषित और नष्ट करें , उसकी उपेक्षा करें तो कौन सी बड़ी बात है? लेकिन वास्तविकता ये है कि हम सब एक दूसरे के सहयोग के बिना अपूर्ण हैं। हमारे विकास में हमारा पुरुषार्थ ही नहीं अन्य सभी का सहयोग अपेक्षित है। क्या माता-पिता, क्या भाई-बंधु, क्या समाज और क्या प्रकृति इन सब के सम्मिलित प्रयासों से ही हमारा जीवन गति पाता है। इन सब के सहयोग के बिना एक सांस लेना भी मुमकिन नहीं। आओ इस भ्रम को तोड़ें कि हम सेल्फ मेड हैं। हम सबको महत्त्व देंगे और सबकी रक्षा करेंगे तभी हमारी सुरक्षा संभव है।

हिन्दी विषय वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होंगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में <u>हिन्दी उदय सम्मान</u> व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ.प्र.मो० 09335155949

email: sahityaseva@rediffmail.com

सतपाल मलहोत्रा की कविताएं

एफए-३३२/ए, प्रथम तल, मानसरोवर गार्डेन, नई दिल्ली-१५

नव वर्ष

नव वर्ष की पावन बेला में अभिनन्दन के सुर सजाना।
उल्लास की छटा लिये, अपने हृदय-आंगन में सतरंगी पुष्प महकाना।।
सुःख समृद्धि के रास-रस में डूब के, समर्पण-भाव का परचम लहराना।
उदासी की मौन गुफ़ाओं में मेरे प्यारे कदापि मत जाना।।
नववर्ष के मोहक रूप को, अपने श्रेष्ठ कार्यो के तप से रिझाना।
अपार प्रसन्नता बिखरे पूरे नभ-मंडल में, ऐसा मानस जीवन अपनाना।।
नववर्ष की पावन बेला में अभिनन्दन के सुर सजाना
उल्लास की छटा लिये अपने हृदय-आंगन में सतरंगी पुष्प महकाना।

गीत

अपनी तो पहचान नहीं है, इसे तलाशे तो तलाशे आखिर कहां।
अपनी धरा-आसमान नहीं है, जायें तो जायें आखिर कहां।।
उम्र की दिशायें, ये हवायें तमस् में खो रही है।
श्वासे-अनन्य बोझ उठाऐं, क़फस में रो रही है।।
मेरी प्रार्थना-शिला में भगवान नहीं है, कर उठायें तो उठाये आखिर कहां।
अपनी धरा-आसमान नहीं है, जायें तो जायें आखिर कहां।।
दिनकर भी ना दे सका प्रभात इन अंधरीली लहरों को
कहां से अनल उठी जो जला गई कई शहरों को।
कुंज गली में मधुमास का गान नहीं है, गुनगुनाऐं तो गुनगुनाएं आखिर कहां
अपनी धरा-आसमान नहीं है, इसे तलाशे तो तलाशें आखिर कहां

गीत

चलो शुक्र है कोई तो मसीहा आया,
जिसने इन्कलाब का परचम फिर से लहराया
जिसने इन्कलाब का झंडा फिर से उठाया,
जिसने इन्कलाब का दीप फिर से जलाया।।
जिसने क्रान्ति का ऐसा बिगुल बजाया,
जिसने बड़े-बड़ों का सिंहसान डोलाया।।
जिसने हम भटकों को सही मार्ग दिखलाया,
जिसने सोये मनुष्य को जगाया, उसको उसका फ़र्ज बतलाया।।
जिसने हमें कंधे से कन्धा मिलाकर चलना सिखाया।
जिसने भ्रष्टाचार के खिलाफ हमें लड़ना सिखाया,
जिसने भ्रष्ट नेताओं को उसकी औकात बता दी,
उन्हीं को उन्हीं के सलीके से, हर बात समझा दी।
जिसने फिर से बापू की याद दिला दी,
जिसने फिर से इन्कलाब की पुख़्ता आंधी चला दी।
ऐसे युगपुरुष को मेरा कोटि-कोटि नमन्
ऐसे सत्यपुरुष को सविनय अर्पण मेरा जीवन।
यह सत्य है हम भ्रष्टाचारी, दुराचारी नेताओं के जुल्म से अत्यंत दुखी थे।
इन्हीं कर्णधारों ने छीन लिये थे तमाम दिन हमारी खुशी के।
लड़ने का हममें जोश नहीं था, आक्रोश नहीं था
अन्ना ने हमें झकझोड़ा हमारा भय-भ्रम तोड़ा।
सहज भाव से इन्कलाब से हमारा प्रत्यक्ष नाता जोड़ा।
जिसने हमें अपनी इन्कलाबी बातों से बल दिया।
तभी तो हर कोई उठके उसी के साथ चल दिया।।
शायद वो कोई देवदूत है, जिसका हरेक इरादा मजबूत है
हमें इन भ्रष्ट नेताओं से निजात दिलाने आया है
रामराज्य करके स्थापित, रावण-राज मिटाने आया है।
कल तक घुट-घुट के मर रहे थे।
आये दिन अपनी ही परछाई से डर रहे थे।।
चलो शुक्र है कोई तो मसीहा आया, जिसने इन्कलाब का परचम फिर से लहराया

एस.एम.एस.रचना

बेस्ट गिफ्ट -'जिंदगी', बेस्ट एहसास- 'खुशी'
बेस्ट फीलिंग- 'प्यार', बेस्ट रिलेशन- 'दोस्ती'
बेस्ट परसन 'आप', बेस्ट फ्रेंड-'हम और आप'

एक बार आंख और दिल में लड़ाई हो गयी,
दिलः देखते हो तुम और दर्द हमें होता है.
आंखःदिल लगाते हो तुम और रोते है हम तब गाल बोला-कमिनों थापड़ तो मैं ही खाता हूं।

मो० ०८६५७१२४४६०

नेपाली के मोबाइल पे रात २ बजे फोन आयाः आप सो तो नहीं रहे थे?
नेपाली गुस्से में बोला- जरुरी नहीं की हर नेपाली चौकीदार हो.

गुड न्यूज. मेरे दोस्त के दादाजी उसके सपने मे आये और कहा-बच्चों दिल खोल के पाप करों क्योंकि नरक में बिल्कुल जगह नहीं है. हम खुद दरवाजे पर बैठे हैं.

बीबी (गुस्से में)- तुम्हारे दिमाग में सिर्फ गोबर भरा है.
पति (प्यार से)-तो इतनी देर से क्यों खा रही हों.

मो०९३३५१३८३८२

पीना होगा!

दर्द अभी तो पीना होगा,
बिन तेरे ही जीना होगा.
जितना चाहे ग़म दे देना,
नभ सा चौड़ा सीना होगा.
कांच सरीखा दिल टूटा है,
इतना दर्द कहीं न होगा.
दूध पिलाया है सांपो को,
कितना कचरा बीना होगा.
मेरा ग़म दिखता है सबको,
परदा कितना झीना होगा.
झूठ, फरेब, छल-कपट,
लेकिन 'सत्य' कहीं न होगा।।

✍सत्यनारायण 'सत्य',
भीलवाड़ा, राजस्थान

++++++++++++++++++++

चरित्र निर्माण करें

आओ सारे भाई मिलकर
शुरु एक अभियान करें
बिगड़े हुए चरित्र हमारे
फिर चरित्र निर्माण करें...
अपनी श्रेष्ठ संस्कृति से हम
पल-पल कितने दूर हुए
अहंकार की मदिरा पीकर
मद में चकनाचूर हुए
आओ करें विचार बैठकर
कोई सफल निदान करें
बिगड़े हुए चरित्र हमारे
फिर चरित्र निर्माण करें...
मानव है पर मानवता से
चलन सभी विपरीत हुए
मन में मैल भरा है भारी
समझें बहुत पुनीत हुए
वो कैसे थे जग वन्दित जो
उन पुरखों का ध्यान करें
बिगड़े हुए चरित्र हमारे
फिर चरित्र निर्माण करें....
भौतिकता की चकाचौध में
हम चरित्र को भूल गये
नैतिकता को ठोकर मारी
नियमों के प्रतिकूल गये
संयत शुद्ध विचार बनायें
संयत निज परिधान करें
बिगड़े हुए चरित्र हमारे
फिर चरित्र निर्माण करें....
देश और संस्कृति देश की
धारण कर सम्मान करें
वृद्ध बुजुर्ग बड़ों की आज्ञा
पालन सेवा मान करें
मातृभूमि की सदसंस्कृति पर
'ताबिश' अर्पित प्रान करें
बिगड़े हुए चरित्र हमारे
फिर चरित्र निर्माण करें....

✍आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'
फीरोजाबाद, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

राजगुरू की कुण्डलियां

जबसे उनने पिया है, राजनीति का पेय।
तबसे अब हम नहीं रहे, परम पूज्य श्रद्धेय।।
परम पूज्य श्रद्धेय, भुलाने राम जुहारी।
खुद को समझन लगे, नेहरू, अटलबिहारी।।
'राजगुरू' मैं गुरू, दुआ ही करता रब से।
मिलता नहीं मिजाज, विधायक मंत्री जबसे।

शाकाहार

शाकाहारी गज गजब, मांसाहारी हीन।
फिर भी इसके गणित को समझें नहीं प्रवीन।।
समझें नहीं प्रवीन, रहें जो शाकाहारी।
चंगे तन मन रहें, दूर भागे बीमारी।
मांस हेतु यह मनुज, शिकारी अत्याचारी।
जीव दया 'राजगुरु', जियो बन शाकाहारी।

गला मत सुजाओ

रखो देश का ना रखो, रखो गले का ध्यान।
गलगलिया सूजे गला, संसद के दरम्यान।।
संसद के दरम्यान, आप इतने चिल्लाते।
गला सूज नुकसान, सभी डॉक्टर बतलाते।
डाक्टर यह सीख, मानो बड़बोले सखो।
'राजगुरू' देश का न, ध्यान निज गले का रखो।।

नेता और शिक्षा

कुलपति की करने लगे, नेता नीम नियुक्ति।
शिक्षा मानक भाड़ में, प्रथम राजपति भक्ति।।
प्रथम राजपति भक्ति, ज्ञान क्या काम करेगा
कहीं न पद छिन जाय, उसी पर ध्यान धरेगा।
सरस्वती का गेह, 'राजगुरु' ऐसी दुर्गती।
नेता नीम नियुक्त, करने लगे हैं कुलपति।।

चुनाव जीतने के दाव

जब चुनाव नजदीक हो, तब यह करिए आप।
आरक्षण कुछ जातियां, दीजे लाली-पाप।।
दीजे लाली-पाप, नये कुछ जिले बनाओ।
नव प्रदेश की बात, वोटरों को भरमाओ।
जीत हेतु सब करो, खेलो नये नये दाव
'राजगुरू' सब करिये, नजदीक हो जब चुनाव।।

✍आचार्य शिवप्रसाद राजभर 'राजगुरू' जबलपुर, म.प्र.

एस.एम.एस.रचना

०१ लड़की के टी-शर्ट पर बने एरोप्लेन को लड़का घूरने लगा.
लड़की-कभी ऐरोप्लेन नहीं देखा क्या?
लड़का-ऐरोप्लेन तो देखा है...पर मां कसम ऐसा एयरपोर्ट नहीं देखा.

०२मोबाइल बना हर लड़की की शान, मिस काल करके लड़को को करती है परेशान, एसएमएस में लिखती है 'आई मिस यू मेरी जान, तुम्हारी आवाज सुनने को तरसे है मेरा कान।

०३ फासलों ने दिल की तड़प को और बढ़ा दिया, आज आपकी याद ने बेहिसाब रुला दिया, आपको शिकवा है कि हमें आपकी याद नहीं आती और हमने आपकी याद में खुद को भुला दिया

०४एक बार भीगीं आंखों ने दिल से शिकवा की 'आंसूओं का बोझ केवल हम क्यों उठाएं?
दिल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया 'सपने किसने देखे थे.'

मो० ०८६५७१२४४६०

सब दिशाओं में हम परस्पर द्वेष न करें: वेद

प्रो0 चन्द्र प्रकाश आर्य,

वेद कहता है कि सब दिशाओं में हम किसी से द्वेष न करें और न कोई हमसे द्वेष करे. द्वेष या वैमनस्य ही घर, बाहर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा सांसारिक वैर विरोध की जड़ है. परस्पर द्वेष के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ. वर्तमान काल के विश्व युद्धों का मूल भी राष्ट्रों तथा समाजों का परस्पर वैरभाव है. इस बारे में-अर्थवेद(३/२७/१-६) के निम्न मंत्र द्रष्टव्य है-

०१ हे अग्निस्वरुप परमेश्वर! आप पूर्व दिशा के स्वामी है. आप बन्धन रहित और रक्षक हैं. हे जगत के स्वामी. आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं.. .हम आपके गुणों को नमस्कार करते हैं. जो कोई अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिस किसी से हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव को हम आपकी न्यायव्यवस्था रूपी मुख में रखते हैं.

०२ हे इन्द्र! आप हमारे दाहिनी ओर की दक्षिण दिशा के स्वामी है. आप तिर्यग योनियों के प्राणियों अर्थात कीट, पतंग, बिच्छू आदि टेढ़े चलने वाले अथवा दुष्ट प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं. माता-पिता और ज्ञानी लोग भी बाण के तुल्य हमारे रक्षक है. हम आपको पुनः पुनः नमन करते है. आगे पूर्ववत.....

०३ हे परमेश्वर! आप पश्चिम दिशा के स्वामी है. बड़े-२ अजगर तथा सर्प आदि विषधारियों से तथा अन्य हिंसाक प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं. भोज्यपदार्थ एवं औषधियां हमारी जीवन रक्षक हैं.

०४ हे शान्ति और आनन्ददायक परमेश्वर. आप उत्तर दिशा के स्वामी है. आप अजन्मा है, सबके रक्षक है.. .हम आपको इन गुणों के लिए नमस्कार करते हैं जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं.

०५ हे सर्वव्यापक परमेश्वर. आप नीचे की दिशा के स्वामी है. हम आपके रक्षक एवं जीवनदायक गुणों को नमस्कार करते हैं.

०६ हे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी. आप हमारे ऊपर की दिशा के स्वामी है. हे ज्ञानमय परमात्मा. आप हमारे रक्षक है. हम आपको आपके गुणों के लिए पुनः पुनः नमन करते हैं.

अर्थवेद (३/२७/१-६) के इन छह मंत्रो में बार-बार दोहराया गया है कि जो कोई हमसे द्वेष करता है, जिस किसी से हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव/वैर या वैमनस्य को हम आपकी न्याय-व्यवस्था पर छोड़ते हैं. इसी द्वेषभाव के कारण घर-परिवार हिंसा ग्रस्त हैं. परिवार में एक दूसरे की हत्या कर डालते हैं. व्यक्तिगत/पारिवारिक द्वेषभाव का दूसरा उदाहरण स्व. रुचिका कांड है जहां १६ साल बाद भी रुचिका का परिवार पूर्व डीजीपी राठौड़ के द्वेष/वैरभाव का शिकार है. तीसरा उदाहरण जातीय विद्वेष/वैरभाव का है जहां खैरलांजी (महाराष्ट्र) गांव में सितम्बर २००६ में एक दलित परिवार के चार लोगों की हत्या कर दी गयी. दुलीना हत्याकांड में चार लोगों को जिन्दा जला दिया गया था. आतंकवादी संगठन दुनिया भर में आतंक और हत्यायें फैला रहे हैं. राजनीतिक द्वेष एवं वैरभाव का उदाहरण इजरायल और फिलस्तीन हैं जहां कभी परस्पर वैर-वैमनस्य खत्म होने का नाम नहीं लेता. यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व में संसार के लोगों तथा राष्ट्रों में शान्ति, भाई-चारा, सद्भाव स्थापित करने के लिए लगा है किन्तु फिर भी राष्ट्रो में, विभिन्न समाजों में परस्पर द्वेष घृणा, वैरभाव जारी है. विकीलीकक्स के खुलासे के बाद विश्व में वैमनस्य बढ़ा है. अरब जगत में लोकतंत्र के लिए लड़ते लोगों का शासक दमन एवं उत्पीड़न कर रहा हैं.

इसलिए वेद ने इन मंत्रों (अर्थवेद (३/२७/१-६) में कहा है कि पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा, नीचे की दिशा और उपर की दिशा-इन सब दिशाओं में हमसे कोई द्वेष न करे और न ही हम किसी से द्वेष करें. वेद की यह उदात्त भावना देशकाल की सीमाओं से परे हैं. समस्त राष्ट्रो तथा समस्त मानव समाज के लिए है. उससे भी उपर समस्त दिशाओं के लिए हैं. जब चारों और द्वेष भाव/वैरभाव नहीं होगा तो सब ओर शान्ति, खुशहाली एवं सबकी समृद्धि होगी. समस्त धरती का, सब प्राणियों का कल्याण होगा. समस्त धरती एक परिवार है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह कथन तभी सार्थक होगा जब हम परस्पर द्वेषभाव को त्याग दें और एक दूसरे को प्रेम करें.

एस.एम.एस.रचना

०१ बेटी मैं पड़ोसी से प्यार करती हूं और उसके साथ भाग रही हूं.
बाप- थेंक यू मेरे पैसे और समय दोनों बच जायेंगें.
बेटी- मैं लेटर पढ रही हूं, जो मम्मी रख के गयी है

०२ लड़की मंदिर में- हे भगवान किसी समझदार लड़के को मेरा ब्याज फ्रेंड बना दो.
भगवान-घर चली जा बेटी, समझदार कभी गर्ल फ्रेंड नहीं बनाते.

मो०९३३५१३८३८२

युवा रचनाकारः कहानी

मानवता

✍**पुरुषोत्तम सिंह राठौर,** छत्तीसगढ़

किस्मत का मारा एक बेबस ऐसे पड़ा कि रेलवे प्लेट फार्म का एक कोना ही उसके लिए सारा संसार हो गया. प्लेटफार्म पर अपनी मंजिल की ओर दौड़ते लोगों की निगाह, उस लाचार इंसान की तरफ कभी-कभार चल देता तो कोई एक दो रुपये के सिक्के उसके सामने फेंककर यह एहसास कराते कि अब भी मानवता थोड़ी बहुत जिंदा है. कहते है विपत्ति अपने साथ कई विपत्तियां लेकर आती है. इस बूढ़े भिखारी पर यह बात सौ फीसदी सही बैठती है. वह असहाय वृद्ध भूख का मारा साथ ही पैर से अपंग, और हाथ के पंजे भी गलने लगे थे। एक आंख थी नहीं दूसरा बुढ़ापा की वजह से धुंधला दिखता था. वह भी ईश्वर की कृति है, बिल्कुल हमारी तरह कुछ अंतर है, कहां. इस भागम भाग जिंदगी में लोग एक दूसरे को कुचल कर आगे बढ़ने की होड़ में क्या-क्या नहीं करते, और शायद इसीलिए इंसानियत नाम की चीज प्रायः समाप्त होती जा रही है। तभी तो गिरे हुये व्यक्ति को पैरों तले रौंदने में भी कोई झिझक नही. उस बूढ़ा, अपंग, रोग ग्रस्त, व्यक्ति के लिए फिर जगह कहां. पता नहीं, वह रेलवे के प्लेटफार्म पर कहां से आ पड़ा था. आज स्थिति ऐसी अपने जिगर के टुकड़े को कचरेदान में फेंकने से भी एक मां नहीं हिचकती, वह अपने ही कोख का नहीं. हर कोई कलियुग का समय कहकर के बात टाल देते हैं, क्योंकि हर बात को टालने की आदत बन चुकी है, फिर भी कहते है दुनिया प्रगति पर है. पर मेरी नजरों में नहीं. मुझे अपने कार्य से रोज रेल पर सफर करना होता था, मैं उस बूढ़े असहाय को करीब एक सप्ताह से उसी स्थान पर पड़ा देखा था. इसके पहले वह प्लेट फार्म पर घुमकर भीख मांगा करता था. मुझे वह देखकर कहता बाबूजी भगवान के नाम पर कुछ दे दो. अपने टिफिन से दो रोटियां उसे जरुर देता था, तभी मुझे संतुष्टि मिलती थी, और वह बहुत खुश होता था.

एक दिन देखा, जहां वह बैठता था, उसी जगह वह लुढ़क गया था, मक्खियां भिनभिना रही थी, उधर से गुजरते हुए दुर्गन्ध का अनुभव किया. उसके सिर पर कुछ कीड़े रेंग रहे थे, कोई उधर से गुजरना नहीं चाह रहे थे. उस भीड़ भरे प्लेट फार्म पर वहीं जगह थी जहॉ पर किसी का आना जाना नहीं था. कोई भीड़ देखकर राहत के लिए उधर चल देता तो वह दृश्य देख समझ कर के तुरंत वापस लौट जाता. भीड़ की बदबू गंवारा थी, पर उधर जाना किसी को अच्छा नहीं लगता था. पता नहीं क्यों मेरी अर्न्तात्मा उधर से गुजरने की इच्छा प्रगट की, और मैं एकाएक आगे बढ़ गया. मुझे उधर जाते देख, दो चार सज्जनों की आवाजें सुनाई दी. अरे भाई उधर कहॉ जा रहे हो, लाश पड़ी हुई है और बहुत दुर्गन्ध भी आ रही है. अरे देख नहीं रहे हो उधर कोई नहीं आ जा रहा है. लोगों की आवाज सुनकर भी मेरे कदम उधर बढ़ रहे थे जैसे मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी हो. लोग अब भी बुंद बुदा रहे थे. मैं उधर यह जानने के लिए जा रहा था कि सुने जगह की खामोशी क्या कह रही है. पास जाने पर पता चला कि मक्खी और कीड़े भी क्या गुनगुना रहे है, क्या कह रहे हैं. वहॉ जाकर देखा तो पाया कि वे भी अपने में मस्त है. उन्हें भी दूसरों की परवाह नहीं है. मेरे मन मे कई तरह के विचार आने लगे, कई प्रश्न एक साथ वार कर रहे थे, इसी उथल पुथल में मैं कुछ देर खोया रहा. संवेदना के साथ विवेचना में यह जाना कि इंसान को जिंदा रहने के लिए रोटी कपड़ा और एक छत की जरुरत होती है, पर जिंदा को लाचार को ये सब दे कौन. हां, इतना जरुर जाना कि जब मनुष्य खाने लायक नहीं रह जाता, तब इंसानो की दयालुता उमड़ पडती है और लोग इंसानियत की नकाब ओढ़ कर, सहृदयता का परिचय देते हैं. इस बुढ़े भिखारी के साथ भी ऐसा हुआ था. अब तो सांसे थम गई थी उसकी. आस पास में चार पांच बिस्कुट की पैकेट, लोगों ने रख दिये थे. उससे यह दिख रहा था कि मुरझाती हुई मानवता की बेलें कुछ हरी दिखाई दे रही है. लेकिन सच तो यह है कि अंतिम समय में इसे इसकी कोई जरुरत भी नही हैं. किसी ने दो गज कपड़े पास ही फेंके थे. जो सफेद रंग के थे. एक आधी सी प्लास्टिक बोतल में किसी ने पानी रखकर यह दिखाया था कि कुछ हम भी साथ है इसके. कुछ पूड़िया, पास में बिखरी

थी. वह भी यह बताने के लिए बिखरी थी, हॉ मैं वहीं रोटी हूँ जिसकी तुम्हें हर रोज इंतजार रहता था. पहले, कब पेट की ज्वाला बुझाऊं. पर अब इसके लिए नहीं यह. इसके पहले मैं उस भिखारी के पास खाने की इतना सामान नहीं देखा था. जिंदा को पूछता भी कौन है. परंतु अब इन खाद्य सामग्रियों का क्या मतलब.

मैं अपने विचारों में तल्लीन था, मेरा ध्यान तब टूटा जब किसी के कदमों की आहट सुनाई दी, वह कदम लाश की ओर बढ़ रहा था, जैसे किसी शिकारी को अपना शिकार नजर आया हो. पीछे मुड़कर देखा तो एक गरीब अनाथ ७-८ वर्ष का लड़का था. वह इधर ही आ रहा था. मुझे देखकर वह कुछ सहम गया, और फिर वह पास आया. उसके बाल बढ़े थे, नाखुन बड़े और मैल भरे हुए थे जो काले काले दीख रहे थे. शरीर कृशकाय था और वह बदन में चड्ढी भर था वस्त्रों के नाम पर. उसे देखकर कोई भी समझ सकता है कि यह बेसहारा बालक है. वह भी भाग्य का मारा, पर वह इस दुर्गन्ध भरे वातावरण में क्यों आया. यह विचार मन में उठे ही थे कि देखा वह बिस्कुट पैकेट, पूड़िया, और लाश की ओर फेंके गये चंद सिक्के और कफन का सफेद कपड़ा अपने मैली सी बोरी में भर रहा था. शायद उसे अपने शरीर पर वस्त्र न होने का दुख था. पेट की ज्वाला सब सहन कर लेती है. बदबुदार जगह में वह भी बिना नांक भौ सिकोड़े सब चीजें उठा रहा था मुझे देख डरते हुए कहा बाबू जी अब यह इसके काम का नहीं रहा. यहां सब बेकार पड़ी है सो खाने के लिए उठा रखा हुं, मैं खामोश था. वह मेरी खामोशी तोड़ते हुए बोला, पर आप यहां क्यों आये हैं बाबूजी. मैं तो भला अपने पेट के लिए आया. तभी मैं उसे बोला मैं भी तुम्हारी तरह कुछ पाने लिए, आत्मा के प्रश्नों के जवाब ढूढने आया हूँ. हम दोनें। को अपना-अपना मिल गया. वह मेरी बात समझ न सका और मैली पोटली उठाये, हैरत भरी नजरो से देखते हुए अपने ठिकाने की ओर जाने लगा.

कुछ देर पश्चात रेलवे स्टेशन में लगे माईक की आवाज मेरे कानों मे टकरायी, कृपया ध्यान दें गाड़ी नंबर नाइन टु डबल वन सोने की चिड़िया एक्सप्रेस थोड़ी ही देर में प्लेटफार्म नम्बर दो पर आयेगी. यह गाड़ी अपने निर्धारित समय से डेढ़ घंटा विलंब से चल रही है, यात्रियों को हो रही असुविधा के लिए खेद है. तभी माईक आवाज सुनकर मैं भी अपने गंतव्य की ओर जाने के लिए टिकट खिड़की की ओर जाने लगा. तभी देखा एक लोहे की चारपायी चार लोग उठाये, गाली गलौच, भला बुरा कहते लाश की ओर जा रहे थे.

उनमें एक स्वीपर बोला यार साले लोग यहीं प्लेटफार्म में आकर ही मरते हैं, जैसे ये प्लेटफार्म नहीं इसके बाप का घर हो, और हम इसके नौकर जो इन्हें ठिकाने लगायें. तभी दुसरा स्वीपर कहने लगा अरे भाई, उसकी भी मजबूरी है, कहॉ से तकलीफ भोगते, भटकते यह बेचारा यहां आ गया था, आखिर वह भी तो हम तुम जैसे ही एक इंसान था, फिर हमारी ड्यूटी भी तो इन जैसों को दफनाने का है. भला हों इसे कोसना क्या. हमें तो अपना कर्त्तव्य खुश होकर निभाना चाहिये. भगवान की दया है जो पेट पालने के साथ ऐसा सुकर्म करने का हमें अवसर मिल रहा है. तब तीसरे स्वीपर ने उसकी बांतो में हां में हां मिलाया और कहां सही बात करते हो भइया, यह पुण्य कार्य ही है नहीं तो लोग आज ड्यूटी में गरीबों का हक मारकर अपने भौतिक संसाधन, बढ़ाकर पाप में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं. उनसे हम लाख गुन अच्छे है, भाई. चौथा आदमी तीनों की बात गंभीरता से सुन रहा था उसे कुछ कहना था, पर चुप रहा, शायद खामोशी ही उसकी जिंदगी थी. किसी ने रेलवे स्टेशन मास्टर को खबर दी थी कि यात्रियों के लिए प्लेटफार्म से लाश हटा दी जाए. ट्रेन आने के पहले ही उसे हटा दिया गया, जगह खाली हो गई थी, फिनायल की गंध चारो ओर आ रही थी, ट्रेन आई, फिर वही भीड़ दिखाई दी, बिल्कुल पहले जैसे. मैं भी उसमे सवार हुआ, कुछ सोचकर एक सीट पर बैठ गया, सभी यात्री अपने में मस्त और व्यस्त नजर आये, बिल्कुल मक्खी और कीड़ों की तरह, जिसे मैं उसे लाश पर रेगते हुए देख चुका था. आधुनिक मनुष्य के मनुष्यता पर विचार कर रहा था. रेलगाड़ी की गति विलंब के कारण तेज थी. क्या इंसानियत की गाड़ी हमेशा विलंब से आती है और खेद ही प्रकट करती है. क्यों नहीं चाहते हम यह गाड़ी भी निर्धारित समय में आये. इसी विचारों में लगे मुझे पता नहीं चला कब ५ स्टेशन पार हो गई. बस अगले प्लेटफार्म पर मुझे भी उतरना हैं.

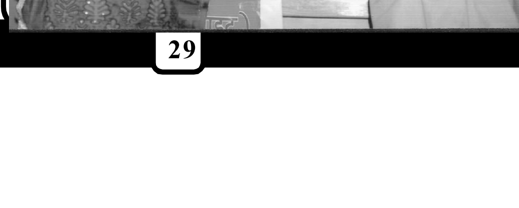

९वें साहित्य मेला के अवसर पर कानपुर की एक साहित्यिक संस्था द्वारा डॉ० तारा सिंह सम्मानित

आओ आध्यात्मिक रंगों से खेले होली

✍ ललित गर्ग, दिल्ली

जिंदगी जब सारी खुशियों को स्वयं में समेटकर प्रस्तुति का बहाना माँगती है तब प्रकृति मनुष्य को होली जैसा त्योहार देती है. होली भारत का एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक त्यौहार है. अध्यात्म का अर्थ है मनुष्य का ईश्वर से संबंधित होना है. इसलिए होली मानव का परमात्मा से एवं स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का पर्व है. असल में होली बुराइयों के विरुद्ध उठा एक प्रयत्न है, इसी से जिंदगी जीने का नया अंदाज मिलता है, औरों के दुख-दर्द को बाँटा जाता है, बिखरती मानवीय संवेदनाओं को जोड़ा जाता है. आनंद और उल्लास के इस सबसे मुखर त्योहार को हमने कहाँ-से-कहाँ लाकर खड़ा कर दिया है. कभी होली के चंग की हुंकार से जहाँ मन के रंजिश की गाँठें खुलती थीं, दूरियाँ सिमटती थीं वहाँ आज होली के हुड़दंग, अश्लील हरकतों और गंदे तथा हानिकारक पदार्थों के प्रयोग से भयाक्रांत डरे सहमे लोगों के मनों में होली का वास्तविक अर्थ गुम हो रहा है. होली के मोहक रंगों की फुहार से जहाँ प्यार, स्नेह और अपनत्व बिखरता था आज वहीं खतरनाक केमिकल, गुलाल और नकली रंगों से अनेक बीमारियाँ बढ़ रही हैं और मनों की दूरियाँ भी. हम होली कैसे खेलें? किसके साथ खेलें? और होली को कैसे अध यात्म-संस्कृतिपरक बनाएँ. होली को आध्यात्मिक रंगों से खेलने की एक पूरी प्रक्रिया आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणित प्रेक्षाध्यान पद्धति में उपलब्ध है. इसी प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत लेश्या ध्यान कराया जाता है, जो रंगों का ध्यान है. होली पर प्रेक्षाध्यान के ऐसे विशेष ध्यान आयोजित होते हैं, जिनमें ध्यान के माध्यम से विभिन्न रंगों की होली खेली जाती है. बचपन में अपने पिताजी के साथ होली के अवसर पर मैंने ऐसे ही आध्यात्मिक रंगों से होली का अपूर्व एवं विलक्षण आनंद पाया जो आज तक मेरे स्मृति पटल पर तरोताजा है.

यह तो स्पष्ट है कि रंगों से हमारे शरीर, मन, आवेगों आदि का बहुत बड़ा संबंध है. शारीरिक स्वास्थ्य और बीमारी, मन का संतुलन और असंतुलन, आवेगों में कमी और वृद्धि-ये सब इन प्रयत्नों पर निर्भर है कि हम किस प्रकार के रंगों का समायोजन करते हैं और किस प्रकार हम रंगों से अलगाव या संश्लेषण करते हैं. उदाहरणतः नीला रंग शरीर में कम होता है, तो क्रोध अधिक आता है, नीले रंग के ध्यान से इसकी पूर्ति हो जाने पर गुस्सा कम हो जाता है. श्वेत रंग की कमी होती है, तो अशांति बढ़ती है, लाल रंग की कमी होने पर आलस्य और जड़ता पनपती है. पीले रंग की कमी होने पर ज्ञानतंतु निष्क्रिय बन जाते हैं. ज्योतिकेंद्र पर श्वेत रंग, दर्शन-केंद्र पर लाल रंग और ज्ञान-केंद्र पर पीले रंग का ध्यान करने से क्रमशः शांति, सक्रियता और ज्ञानतंतु की सक्रियता उपलब्ध होती है. प्रेक्षाध्यान पद्धति के अन्तर्गत 'होली के ध्यान' में षरीर के विभिन्न अंगों पर विभिन्न रंगों का ध्यान कराया जाता है और इस तरह रंगों के ध्यान में गहराई से उतरकर हम विभिन्न रंगों से रंगे हुए लगने लगा.

> आज होली के हुड़दंग, अश्लील हरकतों और गंदे तथा हानिकारक पदार्थों के प्रयोग से भयाक्रांत डरे सहमे लोगों के मनों में होली का वास्तविक अर्थ गुम हो रहा है. होली के मोहक रंगों की फुहार से जहाँ प्यार, स्नेह और अपनत्व बिखरता था आज वहीं खतरनाक केमिकल, गुलाल और नकली रंगों से अनेक बीमारियाँ बढ़ रही हैं और मनों की दूरियाँ भी. हम होली कैसे खेलें?

लेश्या ध्यान रंगों का ध्यान है. इसमें हम निश्चित रंग को निश्चित चैतन्य-केंद्र पर देखने का प्रयत्न करते हैं. रंगों का साक्षात्कार करने के लिए विविध रंगों की जानकारी आवश्यक है. रंगों के हमें दो भेद करने होंगे-चमकते हुए रंग और अंधे यानी अंध ाकार के रंग. अंधकार का काला, नीला और कापोत रंग अप्रशस्त है. किंतु प्रकाश का काला, नीला और कापोत रंग अप्रशस्त नहीं है. इसी प्रकार अंधकार का लाल, पीला और श्वेत रंग प्रशस्त नहीं है और प्रकाश का लाल, पीला और श्वेत रंग प्रशस्त है. ध्यान में जिन रंगों को हमें देखना है, वे प्रकाश के यानी चमकते हुए होने चाहिए, अंधकार के यानी अंधे नहीं. आचार्य श्री महाप्रज्ञ इसे अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जब व्यक्ति का चरित्र शुद्ध होता है तब उसका संकल्प अपने आप फलित होता है. चरित्र की शुद्धि के आधार पर संकल्प की क्षमता जागती है. जिसका संकल्प-बल जाग जाता है उसकी कोई भी कामना अधूरी नहीं रहती. संकल्प लेश्याओं को प्रभावित करते हैं. लेश्या का बहुत बड़ा सूत्र है-चरित्र. तेजोलेश्या, पद्मलेश्या ओर शुक्ललेश्या-ये तीन उज्ज्वल लेश्याएँ हैं. इनके रंग चमकीले होते हैं. कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या-ये तीन अशुद्ध लेश्याएँ हैं. इनके रंग अंधकार के रंग होते हैं।

वे विकृत भाव पैदा करते हैं. वे रंग हमारे आभामंडल को धूमिल बनाते हैं. चमकते रंग आभामंडल में निर्मलता और उज्ज्वलता लाते हैं. वे आभामंडल की क्षमता बढ़ाते हैं. उनकी जो विद्युत-चुंबकीय रश्मियाँ हैं वे बहुत शक्तिशाली बन जाती हैं.

होली के लिए विशेष तौर से तैयार किए इस विशेष ध्यान उपक्रम में प्रत्येक रंग का ध्यान में साक्षात्कार करने के लिए संकल्प-शक्ति का प्रयोग करवाया जाता है. संकल्प-शक्ति का अर्थ है-कल्पना करना अर्थात् मानसिक चक्षु से इसे स्पष्ट रूप से देखना. यह इस पद्धति का मूल आधार है. कल्पना जितनी अधिक देर टिकेगी और जितनी सघन होगी, उतनी ही सफलता मिलेगी। फिर उस कल्पना को भावना का रूप देना, दृढ़ निश्चय करना. जब हमारी कल्पना उठती है और वह दृढ़ निश्चय में बदल जाती है तो वह संकल्प-शक्ति बन जाती है. पहले पहले कल्पना में इतनी ताकत नहीं होती, किंतु कल्पना को जब संकल्प शक्ति की पुट लगती है, उसकी ताकत बढ़ जाती है. जब कल्पना सुदृढ़ बन जाती है, तब जो रंग हम देखना चाहते हैं, वह साक्षात् दिखाई देने लग जाता है। अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली के निदेशक एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक स्वामी धर्मानंदजी कहते हैं-रंगों की कल्पना की सहायता के लिए ध्यान करने से पूर्व उस रंग को खुली आँखों से अनिमेष दृष्टि से उसी रंग के कागज या प्रकाश के द्वारा कुछ देर तक देख लेने से वह रंग आसानी से कल्पना में आ जाता है. इसके लिए व्यवहार में सेलीफीन पेपर (रंग वाले चिकने पारदर्शी कागज) का व्यवहार किया जाता है. जिसे रंग के कागज को प्रकाश को स्रोत के सामने रखा जाता है, उसी रंग का प्रकाश हमारी आँखों के सामने आता है. फिर वही रंग बंद आँखों से भी स्पष्ट दिखाई देने लग जाता है.

रंग का साक्षात्कार करने के लिए चित्त की स्थिरता या एकाग्रता अनिवार्य है. एकाग्रता का अर्थ है-एक ही कल्पना पर स्थिर रहना, उसका ही चिंतन करते रहना. जब एकाग्रता सधती है, जब चित्त स्थिर बनता है, तब वह कल्पना के रंगों की तरंगों को अपने सूक्ष्म शरीर-तैजस शरीर की सहायता से उत्पन्न करता है. अब कल्पना समाप्त हो जाती है और वास्तविक रंगों की उत्पत्ति हो जाती है.

असल में लेश्या ध्यान का प्रयोग चोटी पर चढ़ने जैसा है. किसी-किसी व्यक्ति को इसमें शीघ्र सफलता मिलती है, पर किसी-किसी को कुछ समय लगता है. वैसी स्थिति में व्यक्ति को न निराश होना चाहिए और न ही अपना धैर्य खोना चाहिए. दृढ़ संकल्प के साथ प्रयत्न को चालू रखना चाहिए.

प्रत्येक व्यक्ति में अनंत शक्ति निहित है. किंतु वह अपनी शक्ति से परिचित नहीं है. अपेक्षा है, अपनी शक्ति को जानने की, उससे परिचित होने की और उसमें आस्था की. लेश्या ध्यान उसका अचूक उपाय है.

कभी-कभी जिस रंग को देखना चाहते हैं, उसके स्थान पर कोई अन्य रंग का अनुभव होने लगता है पर इससे भी निराश होने की जरूरत नहीं है प्रत्युत किसी भी रंग का दिखना इस बात का प्रमाण है कि ध्यान सध रहा है. दूसरे रंगों का दिखना भी संकल्प-शक्ति और वर्ण-शक्ति का परिणाम है. यद्यपि यह बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है, फिर भी इसका अपना महत्त्व है, क्योंकि इससे व्यक्ति की श्रद्धा और आस्था को बल मिलता है. जब तक कोई अनुभव नहीं होता, तो ऐसा लगता है कि साधना फलीभूत नहीं हो रही है. अनुभव छोटा हो या बड़ा, वह बहुत काम का होता है.

होली के अवसर पर आध्यात्मिक रंगों से होली खेलने की प्रेक्षाध्यान की प्रक्रिया निश्चित ही सुखद एवं एक अलौकिक अनुभव है. लेकिन इसके लिए माहौल भी चाहिए और मन भी चाहिए. आओ सब मिलकर होली के इस आध्यात्मिक स्वरूप को समझें और इस पर्व के साथ जुड़ रही विसंगतियों को उखाड़ फेकें.

बाल कृष्ण पाण्डेय को डाक्ट्रेट की उपाधि

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधिवक्ता, बार एसोसियेशन बोर्ड ऑफ रेवन्यू, उ.प्र. के महासचिव एवं राष्ट्रीय रामायण मेला श्रृंगवेरपुर धाम के अध्यक्ष बाल कृष्ण पाण्डेय को छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के २६वें दीक्षान्त समारोह में डॉक्टर ऑफ फिलासिपी (पी.एच.डी.) की उपाधि प्रदान की गई. श्री पाण्डेय का शोध प्रबंध हिन्दी विषय में 'तुलसी का अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य रामायण महोत्सव के विशेष सन्दर्भ में' था. इन्होंने शोध इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय के नेतृत्व में किया है. दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि योजना आयोग भारत सरकार के सदस्य डॉ० नरेन्द्र जाधव थे. अध्यक्षता उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति बी.एल.जोशी ने की.

सम्मानार्थ प्रविष्टियां आमंत्रित है

भाग्य दर्पण के दस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भाग्य दर्पण प्रकाशन तथा भारतीय युवा विकास समिति उ० प्र० द्वारा १५ मई २०१२ को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है। जीवन परिचय, दो रंगीन फोटो, किसी भी विधा में दो लेख अथवा रचनाएँ और एक उपयुक्त डाक टिकट लगा व स्व पता लिखा लिफाफा तथा प्रवेश शुल्क ५०० रूपये सादर आमन्त्रित है। प्रविष्टि प्राप्त प्रतिभागियों को सम्मान समारोह में आमन्त्रित कर उनकी योग्यतानुसार सम्मानोंपाधियों से सम्मानित किया जायेगा। साहित्यकारों के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य करने वाले समाज सेवियों, चिकित्सकों, पत्रकारों, धर्माचार्यों, शिक्षकों एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों को विभिन्न मानदोपाधियों से सम्मानित किया जायेगा। भारतीय युवा विकास समिति उ० प्र०, भाग्य दर्पण पत्रिका एवं विश्व धर्म संसद द्वारा साहित्यकार शिरोमणि, साहित्कार रत्न, साहित्य वाचस्पति, काव्य कलाधर, कवि शिरोमणि, काव्य कुल भूषण, काव्य गौरव, काव्य रत्न, पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकार कुल भूषण, चिकित्सक रत्न, चिकित्सक शिरोमणि, चिकित्सक गौरव, चिकित्सक वाचस्पति, तंत्र सम्राट, तंत्र शिरोमणि, तंत्र रत्न, तंत्राचार्य, ज्योतिष वाचस्पति, ज्योतिष विद्यासागर, तंत्र ज्योतिषाचार्य, अध्यात्ममार्तण्ड समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाज कुल भूषण, समाज गौरव, शिक्षक श्री, शिक्षक रत्न, शिक्षक शिरोमणि, शिक्षक सम्राट, शिक्षासागर, विद्यार्थी गौरव, विद्यार्थी शिरोमणि, विद्यार्थी रत्न, सम्पादक श्री, सम्पादक रत्न, सम्पादक शिरोमणि, सम्पादक सम्राट, मानस हंस, मानस भूषण, धर्माचार्य, धर्म रक्षक, अध्यात्म शिरोमणि, अध्यात्म गौरव, आदि मानदोपाधियों से सम्मानित किया जायेगा। **प्रविष्टियाँ १५ अप्रैल २०१२** तक प्राप्त होना आवश्यक है। तदोपरान्त प्राप्त होने वाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं होगा। प्रवेश शुल्क भाग्य दर्पण के भारतीय स्टेट बैंक की शाखा पलिया कलाँ (खीरी) के बचत खाता संख्या ३०७४३३२५७८२ में किसी भी सी०बी०एस० बैंक से जमा करा कर जमा की रसीद प्रविष्टि के साथ प्रेषित करना होगा। अथवा सीधे मनि आर्डर और प्रविष्टियाँ निम्न पते पर भेजें -

अध्यक्ष-भारतीय युवा विकास समिति उ० प्र० भानपुरी खजुरिया

जिला-लखीमपुर (खीरी)-२६२६०४ उ० प्र० सर्म्पक फोन- 05871 246241 मो0 9450446301

विशेष- विद्यार्थियों को प्रवेश शुल्क देय नहीं है। वे केवल अपने विद्यालय के प्राचार्य से गत वर्ष के रिजल्ट (अंक-पत्र) व कार्यो की संस्तुति प्रेषित करें।

आवश्यक सूचना

सूचित किया जाता है कि भाग्य दर्पण पत्रिका और भारतीय युवा विकास समिति उ० प्र० द्वारा फरवरी माह में होने वाले सम्मान समारोह को ५ राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनावों के मद्देनज़र स्थिगित कर दिया गया था। यह सम्मान समारोह अब १५ मई २०१२ को होगा। अब प्रविष्टियाँ १५ अप्रैल २०१२ तक आमन्त्रित है।

अध्यक्ष-भारतीय युवा विकास समिति उ० प्र०

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-२०१२

प्रभु श्री श्रीनाथजी के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-२०१२ इलाहाबाद के प्रख्यात हिन्दी विज्ञान लेखक, संपादक, अनुवादक एवं 'विज्ञान परिषद' के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपाल मिश्र को देना सुनिश्चित किया गया है. यह सम्मान श्रीनाथद्वारा में 'साहित्य मंडल' द्वारा आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा. सम्मान स्वरुप अभिनन्दन एवं सम्मान पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की जाएगी.

वाराणसी में सन् १६०५ में स्थापित हिन्दी प्रचारक परिवार के संस्थापक, निस्पृह समाज सेवी, साहित्यानुरागी एवं ऐय़ारी कथाओं के सुप्रसिद्ध लेखक श्री निहालचन्द बेरी तथा उनके यशस्वी पुत्र व हिन्दी प्रकाशन जगत् के पुरोधा श्री कृष्णचन्द्र बेरी की पावन स्मृति में 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' की स्थापना की गयी है.

उक्त पुरस्कार अब तक डॉ०युगेश्वर, डॉ० बद्रीनाथ कपूर, डॉ० प्रमोद कुमार अग्रवाल, प्रवासी कवि श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल, श्रीमती उर्मिकृष्ण एवं डॉ० हरमहेन्द्र सिंह बेदी को प्रदान किया जा चुका है.

विधिश्री 'मनमौजी' को 'यश मंगल स्मृति सम्मान'

'साहित्यकार की स्मृति में उसके परिवार द्वारा साहित्य सम्मान का आयोजन उसके प्रति सच्ची श्रद्धा अर्पित करना है. साहित्यकार वह है जिसकी कथनी-करनी में अंतर ना हो. यदि हो तो आटे में नमक के समान. साहित्य का दूसरा नाम साधना है. साधक शायर है तो उसका साहित्य उसकी शायरी. उदाहरण यश मंगल के परिवार में उनके संस्कार, सोच-समझ और परिणाम स्वरुप यह समारोह.' उक्त बाते विधिश्री पवन चौधरी 'मनमौजी' ने पानीपत में अंकन साहित्यिक मंच के तत्वाधान में आयोजित स्व. यश मंगल स्मृति साहित्य साधना सम्मान समारोह में व्यक्त किए.

इस अवसर पर मनमौजी जी को यश मंगल स्मृति साहित्य साधना सम्मान प्रदान किया गया है. समारोह की अध्यक्षता डॉ० जे.सी.गुप्ता ने की तथा समारोह में यशमंगल का समस्त परिवार उपस्थित था. इस अवसर पर डॉ. ए.पी. जैन, दर्शन सिंह आजाद, डॉ. राणा प्रताप सिंह गणगौरी आदि उपस्थित थे.

रामआसरे को रविन्द्रनाथ सम्मान

कोलकाता की साहित्यिक संस्था भारतीय वाङमय पीठ द्वारा गाजियाबाद, उ.प्र. के कवि रामआसरे गोयल को 'कवि गुरु रविन्द्र नाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान से अलंकृत किया गया. यह सम्मान श्री गोयल को उनकी पुस्तक सुरबाला के लिए प्रदान किया गया है। श्री गोयल पत्रिका परिवार की तरफ से बधाई.

सुश्री सुरेखा शर्मा को महिला बाल साहित्य रत्न सम्मान

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ का सोलहवां महाधिवेशन सम्पन्न

विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर, बिहार का १६वां दो दिवसीय महाधिवेशन उज्जैन में १३ व १४ दिसम्बर ११ को सम्पन्न हुआ. जिसका उद्घाटन पंजाब उच्च. शिक्षा एवं शोधा केन्द्र के निदेशक डॉ० अमर सिंह वधान व डॉ० राम निवास मानव ने किया. मुख्य अतिथि के रूप में पाणिनी संस्कृत विश्व. के पूर्व कुलपति डॉ० मोहन गुप्त, विशिष्ट अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश बाल संरक्षण आयोग के अधयक्ष श्री हिमांशु जोशी, म.प्र. खनिज निगम के उपाध्यक्ष श्री गोविन्द मालूजी एवं पूर्व सांसद श्री दिवाकर नातुजी थे. आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से आये दो सौ से अधिक विद्वानों को विद्यासागर, विद्यावाचस्पति, महाकवि, भारत-गौरव, अंग गौरव, भारतीय भाषा रत्न, समाज सेवी रत्न, साहित्य शिरोमणि, कवि शिरोमणि, पत्रकार शिरोमणि से सम्मानित किया गया. भारत गौरव सम्मान संतश्री डॉ० सुमन भाई, डॉ० अमर सिंह बधान, डॉ० बाल शौरी रेड्डी, डॉ० रामनिवास मानव, डॉ०योगेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ० विनोद बब्बर, डॉ० सुरजीत सिंह जोबन, श्री उदयभानु पाण्डेय, डॉ० राजेन्द्र परदेशी, डॉ० मिसर सदोष आदि प्रमुख थे. इस अवसर पर विद्यापीठ की शोध पत्रिका 'पीठवार्ता' , रानीपुरी की 'भगवान सूर्य' और रवीन्द्र नाथ तिवारी की पत्रिका 'उमा' का लोकार्पण किया गया. कवि सम्मेलन में डॉ० महेन्द्र मयंक, डॉ० प्रेमचन्द्र पाण्डेय, डॉ० रामलखन राय, सत्येन भास्कर, बलिराम महतो हरिचेरा, हरिहर राम त्रिपाठी, राघवेन्द्र सहाय, डॉ० ओमप्रकाश हयारण दर्द, डॉ० जगमग आदि ने अपनी कविताओं से मंत्रमुग्ध किया.

तृतीय सत्र का संचालन पीठ कुलसचिव डॉ० देवेन्द्र नाथ शाह की देखरेख में हुआ. इस बैठक में नई कार्यकारिणी का गठन भी किया गया जिसमें डॉ०बाल शौरी रेड्डी, चेन्नई-अधिष्ठाता, संत डॉ०सुमन भाई मानस भूषण-उज्जैन-कुलाधिपति, डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, भागलपुर-कुलपति, डॉ० अमर सिंह बधान, पंजाब-प्रतिकुलपति, श्रीमती श्यामा देवी सोन था लिया, भागलपुर-कोषपाल, डॉ० महेन्द्र मयंक, भागलपुर-जनसंपर्क पदाधिकारी, डॉ० देवेन्द्र नाथ साह, भागलपुर-कुलसचिव, श्री मुख्तार आलम, प्रो० सुदामा महतो को उप कुलसचिव, डॉ० इन्दूभूषण मिश्र 'देवेन्दु', डॉ० प्रेमचन्द्र पाण्डेय, डॉ० जयंत जलद, श्री पंचदेव भगत, श्री बलिराम महतो, श्री प्रीतम कुमार को सदस्य चयन किया

समीक्षाएं

आकाश अनन्त है

वानप्रस्थ जीवन का निर्वहन कर रहे आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' की अधिकांश कृतियां धार्मिक ही हैं. इनमें समाज को द्विग्दर्शित करने वाले संदेश समाहित होते हैं. मुझे व्यक्तिगत रुप से कुछ पुस्तकों को पढ़ने का सौभाग्य मिला है. आपकी रचनाएं अन्य साहित्यकारों से अलग हटकर होती है. वानप्रस्थ जीवन के अनुरुप रचनाएं वानप्रस्थ जीवन के परिप्रेक्ष्य को परिपादित करती हैं. प्रस्तुत काव्य संग्रह 'आकाश अनन्त है' की भी अधिकांश रचनाएं आध्यात्मिक दृष्टिकोण को लेकर ही लिखी गई हैं. देखिए पहली रचना-

सुख का सागर/हमारे बहुत पास है। बहुत ही पास/इतना/जितना हम स्वयं अपने पास है।/ पर आश्चर्य यह है/ हम अपने पास बहते सुख सागर को नहीं देख पाते/अपने घर से बाहर निकल जाते हैं/जहां दुःख है/केवल दुःख।

'अहंकार मृत्यु है' में कवि ने अहंकार जैसी मुख्य विषय को बड़े ही सलीके से उठाया है और अहंकार से नुकसान को दर्शाते हुए उसे मृत्यु तक बताया है जो वास्तविक धरातल को छूती है-

अहंकार ही है बोझ की गठड़ी/अहंकार हमें हल्का नहीं होने देता/जितना बड़ा होगा अहंकार का वृक्ष/उतने ही अधिक होगें दुःखों के फल।

++++++++++++++++++++

समर्पण स्वयं अहंकार की मौत है,/हल्का, बिल्कुल हल्का होने का मूलमंत्र।/समर्पण बनाता है हमें/विशाल. ... विराट...../समर्पण से व्यक्ति आत्मचेता बन जाता है।

'आनन्द का सूत्र' में कवि ने सत्य की व्याख्या करते हुए लिखा है-सत्य को ग्रहण करने में/सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।/सत्य है ब्रम्ह/सत्य है आत्मा/सत्य है-धर्म। सार्वभौमिकता सत्य है/सत्य तृप्ति है-असत्य प्यास /सत्य ज्ञान है-असत्य अज्ञान/सत्य लक्ष्य है-असत्य भटकाव/सत्य पूर्णता -असत्य अभाव।

कुल इक्वावन कविताओं के इस संग्रह में अधिकांश कविताएं कुछ न कुछ संदेश देती है. आशा है पाठकों को भी पसंद आएगी.

खिलती कलियां महकते फूल

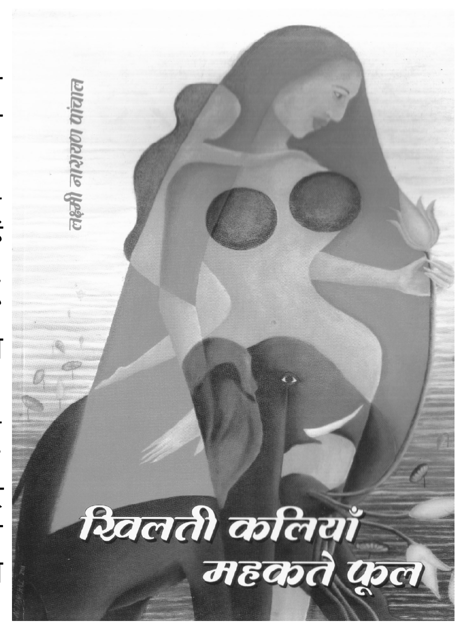

रचनाकार अपनी भावनाओं को विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त करता है. इनमें एक माध्यम लेखनी की काव्य विधा भी है. काव्य विधा एक ऐसा माध्यम है जो अगर सार्थक, जनोपयोगी, जनभाषा में हो तो आम आदमी की जुबान पर आसानी से पहुंच जाता है. यद्यपि आज काव्य विधा के रचनाकारों की संख्या तो बढ़ी है लेकिन लेखन क्षमता नहीं. वर्तमान में कविं ऐसी रचनाएं बहुत ही कम देते है कि आम आदमी इन्हें उद्धरण/स्लोगन आदि के रूप में प्रयोग में लायें. लक्ष्मी नारायण पांचाल जी का प्रस्तुत काव्य संग्रह खिलती कलियां मंहकते फूल नामक काव्य संग्रह कुछ हद तक ऐसी रचनाओं को समाहित किए हुए है जिन्हें उद्धरण/स्लोगन आदि के रुप में प्रयोग में लाया जा सकता है. देखिए बानगी के तौर पर-

खुशबू और पहचान सभी की, होती न्यारी-न्यारी है/कुछ गले की शोभा बनते, कुछ चरणों की धूल यहां।

++++++++++++++++++

मैं तेरे पास आना चाहता हूं/तुम्हें गले से लगाना चाहता हूं/यहां, सब वायदे और बात झूठी हैं/ मैं तुम्हें अपना बनाना चाहता हूं।

++++++++++++++++++

गीत प्यार के गाकर तो देखिए/प्यार दिल से थोड़ा लुटाकर तो देखिए।/क्यूं छुपकर करते हो वार नजरों से/घूंघट ये अपना हटाकर तो देखिए।

+++++++++++++++++++

पहरे ना तुम पर बैठा दे कोई आज बन्धन ये सारे हटा दीजिए/ इस नूर-ए-इलाही से नूर को/बस हम पर आज लुटा दीजिए।

इस तरह की बहुत सारी पंक्तियां इस संग्रह में आपको पढ़ने व गुनगुनाने की मिल जायेगी. रचनाकार को प्रस्तुत संग्रह के लिए बधाई

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी